असाध्य वि-

महत्व
के

ॐ अर्हम्

जैनियों की तरक्की.

जिसको

न व जैनेतर पाठक पढकरके अपने अपने
समाजकी उन्नति कर सकते हैं.

लेखक व प्रकाशक,

लक्ष्मी. खलेचा.

जावद (मालवा)

श्री सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेसमा मूलचदभाई गीकमलाले
छाप्यु पानकोरनाका-अमदावाद.

र सवत २४५५. विक्रम स. १९८५.

सौ पुस्तकका
४०) रुपैया

मूल्य
आठ आना.

भूमिका

जिस जैन समाज की पूर्वकालीन स्थिति द्विती जैसी दिनों दिन धन धान्य वलवुद्धि तेज कला अ वृद्धि होती थी उसही जैन समाज की स्थिति आज हीय कृष्ण पक्षीय प्रतिपदा के चन्द्र जैसी धनधान्य वलवुद्धि आदि में हानि होती हुई दिखाई देती है, ज्यों ज्यों चन्द्र गति में फेर पड़ता है, त्यों त्या उस की कलाओं में हानि वृद्धि होती है तद्वत् जैनसमाज की भी जैसी जैसी गति होती है वैसी वैसी उस में हानि वृद्धि हुवा करती है, इस से यह अटल नियम सिद्ध होता है कि, सकारण ही कार्य्य की प्रवृत्ति हुआ करती है,

अव देखना होगा कि वे कौन से कारण हैं कि जो हानि और वृद्धि में निमित्त भूत होते हैं प्रिय पाठकों ! ज्यादा लिखकर इतना ही लिखना ठीक होगा कि आप के कर क मलों में रही हुई, " जैनियोंकी तरक्की " नामक पुस्तक को पढ़ लें,

जैन समाज में अनेक मत पन्थ मौजूद हैं उनमें से किसी भी एक मत पन्थ विशेष की निंदा न करना यह नियम इस पुस्तक में खास ध्यानपूर्वक आदि से अंत तक रक्खा गया है

इस पुस्तक में प्रस्तावोचित भाषाका ही उपयोग किया गया है,

इस पुस्तक में डंके की चोट से यह सिद्ध किया गया है कि जैन समाज यदि उन उन हानि वृद्धि के कारणों त

दीर्घदृष्टी हो कर विचार करें तो तरक्की होना कोई असाध्य विषय नहीं है,

अद्यावधि समाज तरक्की के विषयों की संक्षिप्त महत्व पूर्ण और सार्थक दिग्दर्शन कराने वाली प्रस्तुत पुस्तक के जैसी दूसरी कोई पुस्तक क्वचित् ही पाठकों ने पढ़ी होगी,

इस पुस्तक की आपलोग इज्जत करेंगे और श्रीमंत लोग सेंकड़ो की सख्यामें खरीद कर अमूल्य वितरण कर प्रत्येक जैन व जैनेतर भाईयों के कर कमलों में पहूचावेंगे और इसे सविचार पढेपढा वेंगे और इस में लिखे हुए विषयों को यथोचित अमल करें करावेंगे तो समाज की उन्नति होकर मेरा परिश्रम भी सफल होगा.

मैंने जो कुछ तुच्छ बुद्धि अनुसार श्रावक श्राविका व साधु साध्वी महाराजों के विषय में जो अर्ज की है उसमें कोई अविनय या कटाक्ष के शब्द लिखे हो तो अपने उदार हृदय से क्षमा करें और लेखक के परिणाम व लेखके विषय की तरफ विचार करें, इतने पर भी जो शब्द या विषय सुधारा करने के लायक हो उसे कृपाकर लिखभेजे म उसे सादर द्वितीया वृत्ति में यथोचित्त सशोधन करूगा, ॥

इस पुस्तक के विषय में अतिशय लिखना आवश्यकीय प्रतीत नहीं होता इसको पढ़ने से ही आपको मालूम होगा,

खरतर गच्छ गणाधीश्वर श्रीमान् हरिसागरजी महाराज साहबके सुशिष्य श्रीमान् कवीन्द्रसागरजी महाराजने अपने

तन मनसे इस पुस्तकके संशोधन करनेमें सहायता की है और प्रुफोंको अच्छी तरहसे अवलोकन कर विषयोंको सुसंगठित करनेमें समयका भोग दिया है इस लिये आप साहबको मैं सहस्रशः धन्यवाद देता हूं, आपके इस उपकारको मैं कभी भूलने वाला नहीं हूं. हमारी जैन समाजमें ऐसे आत्मभोग देनेवाले सैंकडों महात्मा जागें ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है,

श्रीमान् पूज्यवर विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज व श्रीमान् विजयेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज व महोपाध्याय श्रीमान् सुमति सागरजी महाराज व पंडित प्रवर मणिसागरजी महाराज व बम्बईमें श्रीमान् लब्धिविजयसूरीश्वरजी महाराज श्रीमान् उपाध्याय श्रीजयसागरजी महाराज श्रीमान् तीर्थविजयजी महाराज आदि आदि मुनि महाराजोंने व हिन्दीके सुयोग्य लेखक श्रीयुत सुखसंपतरायजी साहब भंडारी, श्रीमान् सेठ कनककमलजी चोधरी वडनगर, व श्रीमान् हीरालालजी साहब वकील व श्रीमान् दीवान गुलाबचंदजी साहब ढड्डा एम ए. झाबुआ व श्रीमान् सेठ बहादुरसिंहजी साहब सींगी कलकत्ता व सेठ भोगीलाल हालाभाई, दानवीर श्रीमान् राव बहादूर सेठ पुनमचंद करमचंद (कोटा) व श्रीमान् बाबू रतनचंद चुंनीलाल वालकेश्वर, श्री. बाबू पूरणचंद्रजी सा० नाहर कलकत्ता, श्री. चोधरी पन्नालालजी सा. नीमच श्री. शेठ हीराचंदजी सा. अजमेर व श्रीमान् बाबू भगवानदास पनालाल जोहरी साहब पाटन निवासीने प्रस्तुत पुस्तकके विषयोंको अवलोकन कर उसमें प्रसङ्गोचित सूचनायें की थी अतः

उनका सहर्ष स्वीकार पूर्वक आपश्रीमानों का मैं बहुत आभारी बनता हू.

और इस पुस्तक के अहमदावाद में प्रकाशन होते समय यहापर विराजी हुई खरतरगच्छीय श्रीमान् सुखसागरजी महाराज के वर्तमान पट्टधर श्री हरिसागरजी महाराज की आज्ञानुयायिनी विदुषी साध्वी वर्या *श्रीमती वल्लभश्रीजी महाराजनेभी प्रुफ सशोधन और उचित सूचना आदि देने में उपकार किया है अतः आप श्रीमती जी का भी मैं ऋणी हूं

इस तरह उपर्युक्त उन प्रखर पण्डितोंकी सहानुभूति व सहायता मिलने परभी सावधानतासे सशोधित करने पर भी यदि प्रस्तुत पुस्तकमें मति मान्यतासे, प्रमादसे दृष्टिदोष से और मुद्रणादि दोष से कहीं पर भी स्खलना हुई हो तो सहृदय पाठक जन उसका यथोचित समाधान सुधार करेंगे यह मेरी भावना है.

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

जावद
स्टेट गवालियर
JAWAD
Gwalior

समाजहितैषी
लक्ष्मीलाल
सखलेचा

---

* आप श्रीमतीने मालवा, मेवाड़, मारवाड आदि देशोंमें विहार कर अपने सदुपदेश द्वारा जैन व जैनेतरोंको प्रतिबोध दिया था अतः आप श्रीमतीजीका अनुकरण अन्य साध्वीजी महाराजोंको करना चाहिये.

अनुक्रमणिका.

ॐ श्री परमात्मने नमः

जैनियोंकी तरक्की.

मङ्गलाचरणम्

स्रग्धरावृत्तम्

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः॥
श्रीसिध्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

(१) महानुभावों !

जैन जातिका होता हुवा भयकर ह्रास देखकर मेरा हृदय थरथर काप रहा है. बड़ा ही दुःख होता है लेकिन् नहीं मालूम आपलोग अपने जाति धर्म की तरक्की के लिये एकता करनेमें क्यों देरी कर रहे हैं? क्या आपको मालूम नहीं है कि पूर्व कालमें जैन जन सख्या कितनी थी और आज कितनी है, जरा इतिहाससे इसका पता लगाइयें और उन कारणों को अब शीघ्र बद करनेका प्रयत्न कीजिये कि जिनसे दिन प्रतिदिन जैन जनसख्या कम होती जा रही है.

(२) एक समय वह था जब यह जैन जाति सब जातियों में शिरोमणि और उन्नति के शिखर परथी, और आज यह समय है कि वही जैन जाति दूसरी जातिके सामने आटे में नोन (लुण)के समान है, जैन इतिहास और प्राचीन शिला लेखादि द्वारा यह निर्विवाद सिद्ध होता है, कि पूर्व काल में सारे भारत वर्ष में जैनधर्म का डंका बजता था, करोड़ों की संख्यामें जैन जनता थी. लाखों की संख्या में क्रोड़पति श्रावक समुदाय था. हजारों की संख्या में महान् विद्वान साधु साध्वी थे. और बड़े बड़े महान् धर्म धुरंधर तत्ववेत्ता, ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, जैन धर्मानुयायी चौदह नियम व बारह व्रत के धारक, महा दानी, सम्यक्त्व शाली श्रावक श्राविका थे.

आचार्य महाराजोंने अपने विद्या बुद्धि बलसे लाखों अजैनियोंको जैनी बनाये बड़ेबड़े राजा महाराजाओं को जैनी बनाकर अहिंसाका डंका बजवाया बड़े बड़े प्रतापशाली राजा महाराजा जैनी थे, और जैन धर्म के नियमों का पालन करते थे, इन सब बातों की साक्षी जैन व जैनेतरों के इतिहास व मंदिरो के आकार व प्राचीन टूटे, फूटे, स्तूप, स्थल, इमारतें व शिला लेखादि दे रहें हैं, भारतवर्ष और युरुप आदि के विद्वान् इस विश्व विख्यात जैन धर्म की तारीफ़ कर रहे हैं,

(३) भारत सम्राट् महाराज चन्द्रगुप्त जैनी थे व भगवान महावीर ने नालन्दा स्थान में कई चतुर्मास किये थे, यह किसी

जैनी से और इतिहास गवेषक जैनेतरोंसे भी छिपा हुवा नहीं है। नालन्दामें एक ऐसा विश्वविद्यालय था कि जहा दस हजार विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र व रहने के लिये जगह मुफ्त मिलती थी। इसमें एक सौ तो व्याख्यान के कमरे थे, बड़े बडे मकान विद्यार्थियों के रहने के लिये बने हुवे थे विद्यालयके अहातेमें ऐसे ऐसे बाग बगीचे फव्वारे, फल, फूल, रहते थे कि, सारा स्थान स्वर्गवत् मालूम देता था। ऐसे मकानके कुछ निशान अबतक मिलते है। गवालियरके किलेकी जैन मूर्तियों व मैसूर कर्नाटक प्रांतके और राणकपुर (गोडवाड) मेवाड, मारवाड, गुजरातदेश के व आबू पहाड के श्वेताम्बर जैन मन्दिरों के देखने से उपरोक्त कथन की पुष्टी होती है। करीब ७५० वर्षही हुवे है कि महाराज हेमचन्द्रांचार्य पाटन (गुजरात) शहरमें, पधारे थे उस समय जब उनके स्वागतमें जो श्रावक समुदाय उपस्थित हुवा था उस समुदाय के अन्दर अठारासो तो केवल क्रोड़पति शेठ ही थे।

(४) डॉक्टर बुल्हर साहब ने पता लगाया है कि जर्मन आदि देशों में डेड लाख जैन ग्रन्थ है और ऐसे ही शास्त्रोंसे युरोपवासियों ने कला, कौशल, विद्या, हुन्नर व वैज्ञानिक बातें पैदा की है. कई जैन ग्रन्थोंका उल्था अंगरेजी आदि भाषा मे होचुका हैं। विचार की बात है कि अन्य लोग और विदे-

शियोंने अपने ग्रन्थोंकी कदर की व फायदा उठाया। मगर कई जैनी भाइयोंने अपने ग्रन्थोंको पढ़ा, सुना. व देखा तक नहीं करीब २०००–२५०० वर्ष पहिले भारत में यज्ञादिक में देवी देवताओं के नाम पर लाखों पशु मारे जाते थे, वह हिंसा बन्द करानेका काम जैनियों का ही है, इस बात की प्रशंसा संसार प्रख्यात लोकमान्य श्रीयुत पंडित बालगंगाधर तिलक वगैरा कई विद्वानों ने अपने मुक्त कंठ से की है।

(५) बहुतप्राचीन समयकी बात जाने दीजिये करीब ४०० वर्ष भी नहीं हुवे, अकब्बर बादशाह के समय में साढे तीन करोड़ जैनियोंकी संख्या थी, और धन, वैभव, विद्या, बुद्धि, मंत्रशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र आदि अनेक विद्याओं द्वारा जैन धर्म की महिमा भारतवर्ष व अन्य देशों तक मशहूर थी। दिन–पर दिन गिरती अवस्था होते होते जो कुछ आज हालत है आप लोगों से छिपी नहीं है। प्राचीन समय के मुकाबिलेमें वैभव की कीम्मत का हिसाब लगाया जावे तो आज कल की अवस्था कुछ भी नहीं है यानी पहिले माल रूप ज्यादा था और धनरूप कम था, अब मालरूप घट गया है और धन (कीम्मत) रूप बढ़ गया है। जैसे पहिले किसी साहुकार के पास अनाज (गल्ला) १०००) रुपयोंका, जेवर जवाहिरात २०००)का, गाय, भैंस, बैलादि १०००) के, मुतफर्कात माल व मकानादि, २०००) का जुमले ५०००) रुपये की कीम्मत

का था। वो उतनी ही सामग्री आज ५००००) पचास हजार रुपयोंके कीमत की समझी जाती है। जिन लोगोंके पाससे उपरोक्त माल वगैरा चला गया है और पहिले से एक अष्टमाश (⅛) ही रह गया है। मगर कीम्मत बढ जाने से वे अपने दिल में अपने को धनवान ही समझ रहे है। पाठको! जरा विचारियेगा कि प्राचीन जमाने के मुकाबिले आपके पास धन वैभव कुछभी नहीं है। इसी तरह सब व्योपार व जन संख्या की हालत समझिये, जो असली २ काम (छाछके उपर का मख्खन रुपी सार) थोडे परिश्रम में ज्यादा मुनाफे के व्योपार थे वो कुल विदेशी व्योपारियोंके हाथमें चला गया है।

(६) इसी तरह साधु मुनिराजो में बुद्धि बल व उपदेशामृत शक्ति ऐसी तीव्र थी कि जिन्होंने हजारों लाखो विधर्मियों को मास मदिरादि छुडवाकर जैनश्रावक बनाये.

आज कल इन बातोंकी तरफ ध्यान बहुत कम दिया जाता है.

(७) इस पुस्तकको छोटी बनाने के अभिप्राय से जो बात एक जगह लिख दी है वह दूसरी जगह (उस विषय की जरूरत होने हुवे भी) नहीं लिखी है, इस वास्ते पाठकोंसे निवेदन है कि पुस्तक को आदि से अन्त तक पढें और अपनी बुद्धि से विचार कर, करने लायक करिये छोडने लायक छोडिये, जानने योग्य जानिये तो उम्मेद है कि पुस्तक का

जैसा नाम है वैसा काम भी जल्दी होना कोइ मुश्किल बात नहीं है।

हरिगीत:

निज धर्म का प्रचार करना यही इसका मर्म है।
निज जाति का उद्धार करना यह तुम्हारा कर्म है॥
निज जातिकी संख्या बढाना यह तुम्हारा धर्म है।
पर तुम पड़े हो नींदमें कहांतक कहें हा! सर्म है ॥१॥

शोक है यदि जैन हो कर नैन हम खोलें नहीं।
धर्म खो कर पाप बो कर गर्व से डोले नहीं॥
व्यर्थ है धन केलि होना शान भी बेकार है।
जिनको न जिनका ज्ञान है उनको सदा धिक्कार है ॥२॥

लावणी

यह जैन जाति सुखमूल, द्वेष की शूल, धर्म अनुकूल,
। थी परमादी। आश्चर्य युक्त हो लखते थे परवादी।
ो ही जाति समग्र, स्थिती अत्युग्र, हुई क्यों व्यग्र,
नी यह दुखकर, इस जैन जातिकी दशा कहूं समझाकर॥१॥

ुम हो गये विद्या हीन, द्वेष मद लीन, द्रव्य बिन दीन,
छीन बुधवारे। सब कला कुशलता अरु पौरुष को हारे॥
आलस में पड़कर आप, सहो सन्ताप कौन सा पाप,
लगे सिर आकर, इस जैन जातिकी दशा कहूं समझाकर॥२॥

हुवा उच्च कुलका ह्रास, बढा उपहास, क्षुद्र घर वास,
लक्ष्मी कीना । सद वर्णो का सत्व विधाता छीना ॥
अहो ! तुम भूले निजगौरत्व, धर्मका तत्व, और एक्यत्व
रहे विसराकर, इस जैन जाति की दशा कहू समझाकर॥२॥

जैनियों की हीन अवस्था क्यों हुई ?

(८) धर्म पर श्रद्धा कम हुई अन्य धर्म के देवी, देवता, चण्डी, मुण्डी, भैरू, क्षेत्रपाळ, शीतळा, होळी, गोवर, कूडा, कचरा, पीर, पैगम्बरादि मास, मदिरा, भक्षक व भग, गाजा, स्त्री, हथियारादि धारक की मानता पूजा करने लगे

और जनके देवता, नवपदमडल, नवकार मत्र, जिनपञ्जर मत्र, भक्तामरादि, सप्तस्मरण, नवग्रह, शाति, क्षेत्रपालादि यत्र मत्र, प्रभाविक शाति वगेरा के उपाय भूलने लगे बल्के अपने खान पानके आचरण तक बिगाडने लग गये,

(९) पर स्त्री सग वेश्या प्रसग कुजाति सग (पासवान वगेरा) बढा जिनको पूर्व कर्म सयोगसे अच्छी ऋद्धि खान, पान की सामग्री, हुकम ओह्दा, बडा घर इज्जत मिली तो आप काम चेष्टा की तरफ ज्यादा जोरदार बनकर स्वस्त्रीसे प्रेम प्रीति कम करी, उपरोक्त कुव्यसन की तरफ ज्यादा झुके, स्त्रियें मन ही मन पछताती अपने भाग्यको रोने लगी; स्त्री पुरुषोंमे कलह आदि हुए: आखीर उसका नतीजा यह

जैसा नाम है वैसा काम भी जल्दी होना कोइ मुश्किल बात नहीं है।

हरिगीत:

निज धर्म का प्रचार करना यही इसका मर्म है।
निज जाति का उद्धार करना यह तुम्हारा कर्म है॥
निज जातिकी संख्या बढाना यह तुम्हारा धर्म है।
पर तुम पड़े हो नींदमें कहांतक कहें हा! सर्म है ॥१॥

शोक है यदि जैन हो कर नैन हम खोलें नहीं।
धर्म खो कर पाप बो कर गर्व से डोले नहीं॥
व्यर्थ है धन केलि होना ज्ञान भी बेकार है।
जिनको न जिनका ज्ञान है उनको सदा धिक्कार है ॥२॥

लावणी

यह जैन जाति सुखमूल, द्वेष की शूल, धर्म अनुकूल,
न थी परमादी। आश्चर्य युक्त हो लखते थे परवादी।
सो ही जाति समग्र, स्थिती अत्युग्र, हुई क्यों व्यग्र,
बनी यह दुखकर, इस जैन जातिकी दशा कहूं समझाकर॥१

तुम हो गये विद्या हीन, द्वेष मद लीन, द्रव्य बिन दीन,
छीन बुधवारे। सब कला कुशलता अरु पौरूप कों हारे॥
आलस में पड़कर आप, सहो सन्ताप कौन सा पाप,
लगे सिर आकर, इस जैन जातिकी दशा कहूं समझाकर॥२

हुवा उच्च कुलका ह्रास, बढा उपहास, क्षुद्र घर वास,
लक्ष्मी कीना । सद वर्णो का सत्व विधाता छीना ॥
अहो ! तुम भूले निजगौरत्व, धर्मका तत्व, और एक्यत्व
रहे विसराकर, इस जैन जाति की दशा कहूं समझाकर॥३॥

जैनियों की हीन अवस्था क्यों हुई ?

(८) धर्म पर श्रद्धा कम हुई अन्य धर्म के देवी, देवता, चण्डी, मुण्डी, भैरु, क्षेत्रपाळ, शीतळा, होळी, गोबर, कूडा, कचरा, पीर, पैगम्बरादि मास, मदिरा, भक्षक व भग, गाजा, स्त्री, हथियारादि धारक की मानता पूजा करने लगे

और जनके देवता, नवपदमडल, नवकार मत्र, जिनपञ्जर मत्र, भक्तामरादि, सप्तस्मरण, नवग्रह, शाति, क्षेत्रपालादि यत्र, मत्र, प्रभाविक शाति वगेरा के उपाय भूलने लगे बल्के अपने खान पानके आचरण तक बिगाडने लग गये,

(९) पर स्त्री सग वेश्या प्रसग कुजाति सग (पासवान वगैरा) बढा जिनको पूर्व कर्म सयोगसे अच्छी ऋद्धि खान, पान की सामग्री, हुकम ओहदा, बडा घर इज्जत मिली तो आप काम चेष्टा की तरफ ज्यादा जोरदार बनकर स्वस्त्री-से प्रेम प्रीति कम करी, उपरोक्त कुव्यसन की तरफ ज्यादा झुके, स्त्रियें मन ही मन पछताती अपने भाग्यको रोने लगी; स्त्री पुरुषोंमे कलह आदि हुए: अखीर उसका नतीजा यह

हुवा कि आपकी संतान निर्बल निर्बुद्धि और भाग्यहीन पैदा हुई। जैनियों की संख्या घटने का कारण यही है। जो कोई स्त्री पुरुष व्यभिचारी हुवे हैं, वो रोगी हुए या उनका धन वैभव नष्ट हो गया या निःसन्तान हुवे, स्त्री पुरुषोंको इस बुरे व्यसनसे बचने के साधारण उपाय यह हैः—

पर पुरुष के साथ बात चीत हंसी मशखरी नहीं करना, उसके साथ घर बाहर व देशाटन आदि को न जाना, एकान्त में नहीं बैठना, किसी प्रकारका खेल नहीं खेलना रात्रीमें कहीं नहीं जाना, एक ही वाहन सवारी आदि पर न बैठना, पर पुरुषको स्पर्श नहीं करना, उसके शरीर पर तेल आदि मर्दन नहीं करना और एक आसनपर नहीं बैठना।

पर पुरुष से दृष्टि नहीं मिलाना उसके घर अकेले नहीं जाना, उसको अपने घर अकेले नहीं बैठाना उससे शरीर पर तैल आदि मर्दन नहीं कराना, उसके देखते टट्टी, पेशाव, व स्नान न करना। पर पुरुष के सोने के मकान में नजाना, किसी पुरुष के अङ्ग आदिको न निरखना।

पर पुरुष की बिना वस्त्र की (नङ्गी) तस्वीर न देखना।

मेले तमाशे आदि पुरुषों की भीड़ में नहीं जाना।

विवाहिता स्त्री को पीहर में ज्यादा नहीं रहना चाहिये।

वेश्या के घर, मदिरा की दुकान, राजमार्ग और आमशहर बाजार इन स्थानों पर या आसपास में खड़ा नहीं रहना। अपने कुटुंब सासुजी जेठाणी जी देवराणी वगेरा के शामिल साथ रहना.

इसी तरह पुरुषों को भी स्त्री के देखने आदि वर्तावों से बचते रहना चाहिये:—

जब तक स्त्री पुरुषका दिल प्रेमसे परस्पर प्रसन्न न रहे तब तक संतान पराक्रमी, बुद्धिमान व भाग्यवान नहीं होसकती जब आप अन्य स्त्रीपर आशक्त है तो आपकी स्त्री जैसा समझेगी (इसके लिये हम ज्यादा लिखना अच्छा नहीं समझते) पाठक! स्वयं अपने दिल से विचार करलें, आप अनेक ग्रन्थों में स्त्री पुरुषोंके चरित्र पढ़ चुके है। आप परस्त्री व वेश्याप्रसंग में आनन्द समझते है। मगर नहीं! नहीं!! हरगिज नहीं!!! जो आनन्द स्वस्त्री के साथ में आपको मिलता है स्वाधीनता बेफिक्री रहती है, अन्य जगह नहीं। परस्त्री आशक्तोंकी स्थिति महापुरुष इस प्रकारकी कहते है।

नित्यं मनोवचः काये, यैः परस्त्रीषु लंपटः।
सहते सहि दुःख च श्वभ्रे ताडनादिकम् ॥ १ ॥

अर्थात् जो मनुष्य हमेशा मनवचन और शरीर से पराई स्त्रियोंमे लम्पट (आशक्त) रहता है वह मनुष्य निश्चयकर दुःख रोगादि—राजदण्डादि, नरकमें अनेक प्रकारके ताडनादि दुःखों-

को सहता है अर्थात् इसलोकमें और परलोकमें वह दुःखको भोगनेवाला होता है।

पाठक महाशय उपर्युक्त परस्त्री लम्पटकी स्थिति अनेकशः कथानकोंसे और अपने आसपासके निजी अनुभवसे प्रत्यक्षमें जान सकते है कितनेही इस प्रकारके

कुव्यसनियों के सुजाक, प्रमेह, गठिया, वादी, कमजोरी, आतशक, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कफ, दम, क्षीण, भगंदर, गंड-माल, खूनखरावी, नेत्ररोग, मस्तकरोग, वहिरापन वगैरह वीमारियां हुई हैं और वो काम लायक नहीं रहे हैं।

आप महिने भर में ३० दफे स्व स्त्री से रमण करें या पर स्त्री से ८–१० दफे रमें और वेश्या आदि से ३–४ दफे रमें आपके शरीरका वल वरावर क्षीण होगा और उपरोक्त वीमारियां लगेंगी। अतएव हमारी तो यही प्रार्थना है कि ऐसी विमारी बुलाकर तन्दुरुस्ती व भोगविलास में वाधा डालने का काम कदापि न करे। और जो कुछ पैसा आप इस व्यसन में लगाते हैं अगर यही पैसा सुकार्य में या अपने या अपनी स्त्री के श्रृंगारादि में लगाया जावे तो आपही को आनन्द मिले जिस कौम को आप नीची समझते थे जिस जाति की स्त्रियों से आपका ताल्लुक था उनकी संतानें भाग्यशाली व वलशाली हुई और आपकी संतानें उनसे दवने लगी जिन्होंने इस वुरे व्यसन को कम किया है उतनी ही

उन्होंने विजय पाई है धन्य है तीर्थंकरादि महान पुरुषों को कि जिन्होंने वल पुरुपार्थ राज ऋद्धि व अनेक महान् रूप-निधान रमणियों के होते हुए भी त्याग किया ।

स्त्रियों को भी उचित है कि अपने पतिदेव का चित्त हर तरह से प्रसन्न रक्खें । इस विषय में हमारी बनाई पुस्तक देखें जो स्त्रियोंके लिये अति उपयोगी है ।

जैनियों की संख्या कम क्यों हुई ?

(१०) जैनियों में धार्मिक ज्ञान का अभाव होने से जैन धर्म के रहस्य और तत्वों को यथावत् न समझ सकना और अन्य धर्मियों की सोहबत में होते २ उनके धर्म में मिल जाना

(११) परस्पर सहानुभूति प्रेम न दिखलाना, नव शिक्षितों की शकाओं का समाधान न करना और वे किसी तरह की जैन धर्म के विषय में शका करें तो उनको यथार्थ उत्तर न देकर उनका तिरस्कार करना, उनको श्रद्धाभ्रष्ट धर्म-भ्रष्ट आदि अपशब्द कहना ।

(१२) धार्मिक ग्रन्थों को प्रगट न करना, नवीन प्रणाली से न लिखना और न छपाना ।

(१३) जैन धर्म पर होते हुवे आक्षेपों का उत्तर न देना ।

(१४) कोई अन्य धर्मी स्त्री पुरुष जैनी बनें, जैनधर्म का पालन करे तौभी उस नवीन जैनी के साथ प्रेम का वर्ताव न करना और उसको व्याख्यान आदि सभा सोसायटियों में

व खानपान आदि सम्बन्ध में उसका अपमान करना और उसको पास न बिठाना।

(१५) नवीन जैनी भाई का पक्का जैनी होने बाबत कुछ वर्षोंबाद अपने दिल में पक्की खात्री होते हुए भी उनके साथ रोटी बेटी व्यवहार न करना यानी उनको जैन जाति में न मिलाना।

(१६) अपने परस्पर के संकुचित विचारों और ईर्षा द्वेष कलह आदि कारणों से जैन धर्मका परित्याग कर दूसरे धर्म में चला जाना

(१७) अन्न वस्त्रादि से पीड़ितों को सहायता व मदद न करना।

(१८) जैन विद्वानों का प्रत्येक प्रांत में डेपुटेशन व उपदेशक तरीके न जाना, जगह जगह जाहिर भाषण न होना, जैन तत्वों के शंका समाधान का जाहिर चेलेंज न देना।

(१९) छोटी छोटी बातों के लिये जाति में फूट डालना तड़े सम्बन्धी बिरादरी में झगड़े फैलाना वगैरह

(२०) कन्या विक्रय के प्रभाव से जैन जाति में कन्या न मिलने पर दूसरी जाति में जाकर रहना।

(२१) बाल्यविवाह, वृद्धविवाह अधिक होना।

(२२) कन्या की कमी होने पर कई पुरुषों का विवाह ही न होना और निःसंतान घर उठ जाना।

(२३) खानपान की कमी कजूसी अपथ्य भोजनादि कारणों से सतानों की कमी व बाल्यावस्था मे मरणादि ।

(२४) स्त्रियों का अशिक्षिता व स्वास्थ्य रक्षा विद्या की कमी से सतानों का पालन पोषणादि पूरी तौर से नहीं करना ।

(२५) व्यायाम आदि न करना ।

(२६) अनाथ बालकों के लिये पढ़ाने लिखाने हुन्नर शिल्प आदि सिखाने के वास्ते बोर्डिंग आदि न खोलना ।

(२७) जैन भाईयों की बेकारी में उनको उद्योग धधे कारीगरी मजदूरी, मुलाजमत आदि में न लगाना और उनके संतानों की तरक्की में मदद न करना ।

(२८) उपरोक्त कारणों के सिवाय आपस की फूट स्वास्थ्य रक्षा का अभाव, स्त्रीशिक्षा का अभाव, बाल्यावस्था वृद्धावस्था व कुजोड़ विवाह, जरूरी कार्य में कजूसी, और विना जरूरत के कार्य में फिजूल खर्ची, फैशन का खर्चा, आमद से ज्यादा खर्च करना । इसी तरह धर्म कार्य्य में भी किसी जगह कजूसी व किसी जगह ज्यादे खर्च करना मुकद्दमेंबाजी भग गाजा अफीम तम्बाकू आदि नशेबाजी, हानिकारक रिवाज जारी रखना । सप्त व्यसन सेवना । लैन दैन तोल मोल पच पंचायती राज दरबार व्योपारादि में बेईमानी करना । झूठी गवाही देना । बालबच्चों के पढ़ाने लिखाने व

तन्दुरुस्त बनाने शिक्षा दिलाने में कंजूसी करना । आपसमें अप्रेमसे रहना । बाल बच्चों को आरामी अय्याशी बनाना, (मेहनत न लेना) लोभ वश सट्टे आदि बुरे व्योपार करना, ऊंचे व्याज का लेन देन करना, हैसियत के बाहर धंधा करना आदि आदि कारणों से भी अपने कौम की अवनति हुई है और इन बातों को छोड़ने हटाने बाबत सविस्तार शिक्षा रूपी लेख जैनियों की उन्नति कैसे हो इस विषय के लेख में अनुक्रम से लिखा है । उसपर पाठक गौर करलें । और जो जो बुरी बातें अपने में अपने कुटुंब में अपनी तड़ में अपने गांवमें अपनी समाज व देशमें हो वे सब लोग मिलकर बुरी बातें छोड़ अच्छे काम करें ।

जैनियों की उन्नति कैसे हो ?

(२९) आपस की फूट लड़ाई झगड़े एक दुसरे का बुरा चाहना, द्वेष, इर्षा आदि कई तरह के शब्दों में इसकी व्याख्या है और इससे अपनी कौम का ही क्या सारे भारतवर्षका नाश हूवा है इसकी जितनी भी व्याख्या की जावे-उतनीही कम है मैंने तो यही मुनासिब समझा है कि इस फूटकी व्याख्या करना फिजूल है फूट क्यों पैदा होती है इसका कारण व इसका उपाय जबतक न बतलाया जावे तबतक और बातें लिखना मानो आकाश में चित्र करना है ।

कारण तो यह है कि सब जैन संप्रदायों के सिद्धान्त

सम्यग्‌दर्शन, ज्ञान चारित्र इनतीनों को मोक्ष मार्ग मानते हुए आपस की मान्यता में फर्क है।

यह जो इसके खास कारण है समय पाकर निकलेंगे इन कारणों का नाश करना महान आचार्यों का काम है यद्यपि मेरी सम्मति में यही ठीक है कि सूक्ष्म सूक्ष्म विचारो के भेद अभेद से समाजिक व धार्मिक बखेड़ा को उत्पन्न न करके परस्पर सर्व जीव प्रेम व आनन्द से रहें यही जैनियों का मुख्य धर्म है।

श्वेताम्बरों दिगम्बरों की फूट ने लाखों रूपैये मुकद्दमेबाजी और अदाल्तों में खोये दोनों समदाय के अग्रेसरों से हमारा तो यह निवेदन है कि जिस न्यायाधीश के पास आप इन्साफ लेने के उम्मेदवार थे व अब है उनके मुकाबलेमें क्या और विद्वान् बुद्धिमान् भारतवर्ष में नही थे। क्या आपके विश्वास वाले २-४ मनुष्य भी भारतवर्ष में नहीं थे कि जिनको आप दोनों समदाय के लोग अपनी अपनी तरफ से मुखिया पंच चुनकर आपस में पचायती तरीके से फैसला करा लेते, भाइयों अदालतों के जज मजिस्ट्रेटों के निस्बत तो पंचों से आप अच्छा ही न्याय पाते; खैर होना था सो हुवा अब भी जो कुछ छोटे बडे ऐसे झगड़े है उन कुल झगडों को इस पचायती तरीके से फैसल करा लीजिये। इसमें दोनों फिरकों की बात रहेगी अनेक तरह की खर्ची व आपसी ईर्षा नही होगी न्यायाधीश के फैसले से नाराज हुवे तो उनके

ऊपरी न्यायाधीश के पास अपील करोगे अखीर उन्होंने भी आपके (एक के) लिये अच्छा बुरा हुक्म फर्माया तो फिर क्या करोगे। मतलब बात यह है कि पंचोंके न्याय से जज्जों के न्याय में फायदा नहीं, पंच कैसे होना चाहिये इसकी कुछ व्याख्या यह है।

अपने व उधर के फिरके के आदमी न हों अपने या उन के पक्षपाती न हो।

वे इस तनाजे झगड़े के वाकिफ़कार हो तो बहुत ही अच्छा है।

वे इस मामले को समझ सकते हों।

इस झगड़े को मामले को ईर्षा द्वेष बुद्धि से न देखते हों।

अकलमंद, ईमानदार, होशियार और परिश्रमी हों।

न्याय करने में क्या क्या मामले मसाले (सबूत पुरावे) आदि की जरुरत है इसके जानकार हों।

थोडे समय के लिये तो झगड़ा बंद होगया या होजायगा मगर आयंदा अमुक कारण अमुक बात से फिर तनाजा हो जायगा इस बात को समझ सकें व इसका उपाय सोच सकें ऐसे पंच (न्यायाधीश) हों, जमाने के मुताबिक जिस राज्यमें जो तनाजा हो उस राज्य के नियमानुसार (कानून) व फलां अमर फलां वायदा फला शर्त फलां इकरार जायज होगा या नाजायज होगा इस बात को (पंचायत फैसले के वक्त) समझ सकें ऐसे पंच हों।

पचों को भी मुनासिब है, कि जब कोई जीव अपने ऊपर भरोसा रखकर अपने से न्याय कराने का उम्मेदवार हुवा है, तो उस को उचित न्याय देकर उपस्थित हुवे कार्य को तन मन धन से करके परोपकार रुप परमकार्य का पुन्य उपार्जन करना चाहिये । सज्जनोंके तन, मन, धन, परोपकारके लिये ही होते है । क्यों कि कहा भी है.

* श्लोक *

पिवन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयः

अर्थ—नदियें खुद पानी नहीं पीती है, वृक्ष स्वय फल नहीं खाते है, वर्षा से धान्य पैदा होता है, मगर बादल खुद अनाज (धान्य) नहीं खाते हैं वेसे ही परोपकार के लिये सज्जनोंकी विभूतियें (लक्ष्मी) भी होती है.

मामले की तकमील करते वक्त वादी प्रतिवादियों को समझाने वगैरह की कुछ बातें इस प्रकार है —

फरीकों के उज्र उज्रात एक के दूसरे से जवाब दर जवाबत लेकर जो तनाजे हों उनका हवाला (तन्कीह) कायम करदें अमुक अमर, अमुक वाकआ, अमुक मामला, हालत,

साबित होने के लिये फलां (अमुक) सबूत तहरीर, दस्तावेज शिलालेख, कब्जा, हवाला, व जबानी गवाह साक्षी आदि की जरूरत है।

सबूत लेकर या कोई फरीक मोहलत चाहे तो पूरी मोहलत देकर हरएक तकमील करें।

तकमील सबूत पुरावे आदि समाप्त हुए बाद दोनों फरीक की अर्ज सुनकर फैसला फर्मा दें।

भाईयो ? अगर आप इस तरह प्रयत्न कर अपने मामले झगड़े को निपटावेंगे तो आपकी तारीफ़ होगी व धन का दुरुपयोग बंद होगा।

धर्म स्थान के मामले में एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती, आयंदा इससे भी बढकर झगड़ा पैदा होगा। एकता करने के भरोसे पर ज्यादा सीधा बनना (भोलापन) भी बुरा है।

हरएक बातका आगा पीछा, लडाई, झगड़ा वगैरह दुरंदेशी सोचकर कार्य करना बुद्धिमानों का कर्तव्य है, जो बात पहिले छोटी मालूम देती है, वही कुछ समय बाद भारी होजाती है, और उसी से लडाइ झगड़े उपस्थित होते हैं।

(२०) जैनी जैनी मात्रमें संसारिक व धार्मिक तनाजा मिटा देने का दूसरा उपाय यह है कि:—

हर एक गांव, शहर, देश, जाति, तड़ के जैनी (जो कुछ घर या मनुष्य गिनती के हों) कुल इकट्ठे होकर अ-

यनी ओरसे १५–२० वगैरह न्याय करने लायक बुद्धिमान् पुरुषोंको चुन कर उनके नाम एक फेहरिस्त मे दर्ज करलें। फिर राज्य नियमानुसार (स्टाप कागज़ आदि पर) एक ऐसा इकरारनामा (तहरीर) करलें कि, हम (कुल जैनी) वल्द फला, कोम (जाति) फलां, साकिन फला, जिला स्टेट फला के है । जोकि हमने हमारे आपसके जो कुछ झगडे तनाजे (लैन दैन, सबधी स्थावर जंगम जायदाद सबन्धी जमीदारी, घरकी लडाई, वसीयत, गोद, माल की मिलकियत सम्बधी, आने जाने के रास्ते, नारदा, मोरी, पाखाना, हकहकूक सम्बधी, किसी मुहायदे की मजूरी वगैरह सम्बंधी; मतलब बात यह है कि जो मामलात दीवानी के व राजीनामें के फौजदारी व जायदाद माल के पंचायती में व मुकद्दमें में राजीनामें हो सकते है वो कुल) अभी है और जिनका झगडा फला कोर्ट (न्यायालय) में चल रहाहै, व खानगी तनाजे हैं, व आयन्दा हम लोगोंके जोकुछ व जबकभी झगडा तनाजा पैदा हो तो हम लोग वादा करते हैं व लिख देते है कि, फला फला (जिन का नाम न्याय करने वालों की फेहरिस्त में है) आदमियों में से २–४ को पच मुकर्रर कर हम अपना झगड़ा तै करलेंगे। इस में जो बदले व इन्कार करे तो वह राजदरबार पंच पंचायती में झूंठा समझा जावे।

पाठको !

यह मजमून तो मामूली याद दिलाने को लिख दिया

है। बुद्धिमान सज्जन चाहें- वहां, उस देश, तथा राज्य नियमानुसार लिखत करलें, करादें।

अक्सर रुपये पैसे लैन दैन व छोटी बात से बड़ी बात के, ऊंच नीच के, वोल चालके, ममत्व भाव के, खैंच तान से आपसी लड़ाई झगड़े बढ़ जाते हैं, कई कर्ज देने वाले धनवान पुरुषोंको यह शंका पैदा होगी कि राजके हुक्म विना कोई रुपया देवे नहीं, कौन दिलावे, कौन माल दिलावे, कौन दस्तावेजादि लिखावे वगैरह उनके लिये यह समाधान है कि—

पंचोंको सब इख्तियार दे रक्खे हैं, तो पासमें जायदाद होते हुवे तो सब कुछ दिला सकते हैं। पंच विरादरी ऐसी चीज़ है कि बेईमानों को नीचा दिखा सकती है, सब कुछ कर सकती है, और दोनों को इस बातका धर्म विचारना चाहिये कि पाससें होते हुवे लेनदार को न देवें उसके जैसा अधर्मी विश्वासघाती संसारभरमें दूसरा कोई नहीं होता है।

जिसके पास माल जायदाद नहीं है, उन को जान बूझकर लेनदार तकलीफ़ देते हैं, उनका भी पूरा कसूर है वे आप खुदभी खराव होते हैं, और दुसरों को भी तकलीफ़ देते हैं। ऐसे दोनों तरफ़ा की कार्रवाई के निपटारे में मुखिया पंच लोगों की बुद्धिमानी, इमानदारी पर अच्छी तरह चल सकती है कोई मुश्किल वात नहीं। प्राचीन जमाने में इसी तरीकेसे काम होते थे।

ऐसा निपटारा कराने में जो कुछ जहां जैसा मौका हो, वहाँ वैसा खर्चा, फीस, कमीशनादि मुकर्रर करदें, वो रकम अपनी जाति धर्मकी तरक्कीके फण्डमें जमा होती रहे, और अगर मुनासिब हो तो उसमे से कुछ कमीशन पचो को, न्यायाधीशो को व न्याय के खर्च वास्ते मुकर्रर करदें वगैरह । जहा जैसा मौका हो काम लेवें, इतना लिखते व करते हुवेभी धनवानो को रुपया वसूल नहीं होने की शका कर कोई इस प्रस्ताव का खंडन करें तो उनसे हमारा प्रश्न है, कि अगर इसी तरह मुद्दायलेने विचार लियाकि नहीदेना है या निर्धनहै, तो आप राजशक्ति से क्या कर सकेंगे ? अभी क्या कर रहे है । आप स्वय देख रहे हैं, बल्के सिर पर नये खर्चे उठाकर अनेक तरह के वैर विरोध बढा कर के परस्पर कर्म बाध रहे है । कई वर्षोंकी डिग्रिया पड़ी पड़ी मियाद गुजर होगइ, वगैरह वगैरह ।

(३१) महानुभावो ! यदि आप जैन पंचायतके बाबत इन्तजाम कर लेंगे तो आपके हजारों लाखों रुपये जो फिज़ूल खर्च हो जाते हैं, वे बचकर आपहीके घरमें रहेंगे। अगर आपका यह रुपया व अपना अमूल्य समय जैन बोर्डिंग, पाठशाला व समाज उन्नति या व्यापारादि में लगावें तो दिन दूनी रात चौगुनी आप की उन्नति होवे।

श्वेताम्बरी समाजमें [स्थानकवासी मूर्ती पूजक मे, व तेरा पन्थी स्थानकवासीमें, त्रीस्तुति चतुर्थस्तुति में] कहीं कहीं तो आपसी झगडे ऐसे बढ गये है, कि आपसमें की एक जातिमें

भी बेटीव्योहार, सगे संबंधियों का आना जाना तक बन्द होगया है। उसे जल्दी मिटाकर सम्प कर लेना चाहिये।

इसके लिये सर्व सम्प्रदाय के साधु, साध्वी, महाराज व श्रावक, श्राविकावर्ग से हमारी तो अर्ज है कि इन बातोंसे ऐसे कामोंमें अच्छा नतीजा नहीं नीकल सकता आप अपना संप्रदाय नहीं बढ़ा सकते, जो कोई स्त्री पुरुष उधर का धर्म छोड़ आप की तरफ़ आवेगा, वह अपने खुश दिल से आवेगा, आप के क्षमागुण व मीठी बातोंसे आवेगा. आपकी सोहबत व धर्मोपदेश से आवेगा. आपके बुद्धि के वचनों से आवेगा। ये सब कार्य एक दूसरेका परिचय होनेसे व धर्मोपदेश होने से हो सकते हैं।

(३२) हर एक राज्यमें बृटिश गवर्नमेन्टके राज्यशाशन में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि के त्योहारों की तातीलें हैं व अनेक तरह के धार्मिक हक़ बंधे हुवे हैं। मगर जैनियों के पर्व दिनकी तातीलही नहीं। इसका कारण भी आपसकाही कुसंप है। इस विषयमें तीनों सम्प्रदायोंको मिलकर राजा महाराजा व गवर्नमेन्टसे अर्ज करना चाहिये।

महानुभावो !

संगठन (एकता) वो चीज है कि जिससे आप जो चाहें, वही कार्य सिद्ध कर सकेंगे। इस बाबत में जितना भी लेख लिखा जावे थोडा है।

मूर्खों का संगठन व एकता तो अनुचित है. अपने कुल,

जाति, धर्म मर्यादा व तीर्थंकरोंके हुक्मकी पावंदी करो। हजारों मनुष्य गवर्नमेंट व देशी राजके मुकावले खोटे लेख, व्याख्यान देकर जेल में गये। वैसा करने कराने के तो हम सर्वदा विरुद्ध है, और खुशी की वात तो यह है,कि इन वातों से जैनी लोग वचे भी है, ऐसे मामलोंमें शायद ही कोई जेल गया होगा।

आप देखियेंकि युरोपियन लोग उनके जाति,देश,धर्मका पक्ष (ऐसा पक्ष जो करने लायकहै और आपके धर्म जातिमें जवरन् हाथ नही डालते हुवे) करते है। यह उनके लिये तो अच्छाही समझिये। वल्कि इससे आप लोगोंको अक्ल लेना चाहिये कि उनकी तरह आप भी अपने जाति, धर्म, देश का पक्ष करें। अपने देश की वनी हुई चीज काम में लावें। अपनी वनाई चीज कम नफे व ईमानदारी से वेचें। जैसा नमूना देवें वैसा ही माल तैयार कर के देवें। जवान, इकरार के सच्चे वनें इत्यादि।

अपनेको बुद्धि से काम लेना चाहिये। शारिरीक ताकतकी जगह वह भी काम करना जरुरीहै मगर अपने मुकावले के (सामने वाले) शत्रु की ताकतका भी अंदाजा करना व उसका आगा पीछा सोचना उससे पहिले जरुरी है।

जातीय झगड़े व तड़बंदियां।

(३३) आपसी फूटकी शाखाही जातीय झगड़ा है। जातीय झगड़े मुख्यतया मान और ममत्व भाव पैदा होने से बढ़ते हैं। छोटी २ तडवन्दियां बांध कर अपना पक्ष लेते हैं। प्यारे भाइयो! अपना अमूल्य समय, दिमाग की बुद्धि, जो कुछ इस कार्यकी तरफ लगाते हो, अगर यही समय जातिसुधार, स्वधर्मियों का उद्धार, व व्यापारादि कार्य की तरफ लगावें तो कितना अच्छा हो! बाजे बाजे आदमी यह समझते हैं कि हमारी पूछ होगी परन्तु यह खयाल उनका गलत है, पूछ थोडी, निन्दा ज्यादा होती है, और पूछके बजाय एक तरह की पूंछ लग जाती है, कि जो पीढियों तक नहीं मिटती. और इसी प्रपंचमें अनेक तरहके कर्म बन्ध होते हैं। हां, आप कई सालों से पंच मुकर्रर हैं तो आप पंच बने रहियें और बिरादरी के लोगों को भी चाहिये कि उनकी मान मर्यादा न छोड़ें। बल्कि है उससे भी अच्छी तरह उनकी इज्जत करें, अप्पन ही उनकी इज्जत नहीं करेंगे तो और कोन करेगा इतने परभी किसी तरहका पशोपेश वगैरहः आजावे तो बुद्धिमानी से काम करके रास्ता निकाल लेना चाहिये खैंचा-तानी व पक्षा पक्षी न करें.

स्वास्थ्य रक्षा.

(३४) अपनी जाती तथा समाज में वैद्य डॉक्टरोंकी संख्या बिलकुल थोड़ी है और वैद्यक के जैन ग्रथ नवीन प्रणालीसे जितने चाहियें उतने आजतक जाहिर नही हुए दवाइया करने के निस्वत पथ्यापथ्य (खानपान व रहन सहन, का सुधार व परहजका विचार) से चलना ज्यादा फायदेमद है, इस विषय में ज्यादा लिखना ग्रथको वढाना है, कुछ पथ्यापथ्यकी याद रखने योग्य वातें पाठकोंके लिये लिख देता हूं. बिमारको पथ्य रखना चाहिये, व पथ्यसे रहना चाहिये यह वात तो सब कोई जानते ही है. मगर वीमार के निस्वत निरोगावस्था यानी तन्दुरस्ती वालोंको पथ्यसे चलना ज्यादा फायदे मंद व जरूरी वात है कारण वीमार होकर उसका इलाज करानेकी अपेक्षा वीमार ही न हो इसका साधन रखना व प्रयत्न करना अधिक श्रेष्ठ है, हा यह सच है, कि वीमारके पथ्यमें थोडीसी भूल होजाय व साधारण कुपथ्य कर लिया जावे तो वडा नुकसान होता है, और तन्दुरस्ती में साधारण कुपथ्यका बुरा परिणाम प्रत्यक्ष में जल्दी नही दीखता पर इस तरह रोज रोज या अधिक मात्रा में खानपान व रहन सहन का कुपथ्य किया जावे तो थोडे दिन वाद जरूर तन्दुरस्ती विगड कर भयकर रोग पैदा हो जाते हैं. कई जगह तो देखा गया है, कि वीमार होनेपर भी पथ्यापथ्य मालूम नहीं होने से उल्टे (पथ्यकी जगह अपथ्य भोजनादि रहन

सहन के) रास्ते चलते हैं जिससे आराम के वदले वड़ी वीमारियां जकड लेती हैं, अतः हमारी खानपान सम्बन्धी भूलों से बीमार न हो इसके लिये पथ्य रखना बहूत जरूरी है, कहा भी है कि—

धर्म नियम पाले विना, प्रभु भजन है व्यर्थ ।
औषधसेवन क्या करे, जो नहि पाले पथ्य ॥ १ ॥

तन्दुरस्तीमें निम्न प्रकारसे खानपान तथा रहन सहन रखना हितकर है. इनका पालन करनेसे सहसा रोगका आक्रमण नहीं होता, और शरीर निरोग बना रहता है.

(३५) रहनेका मकान रसोई घर, टट्टी, पाखाना, साफ रखना. कपडे साफ पहरना, थोडा पसीना आजावे इतना रोज परिश्रम कर लेना, वन सके तो शक्ति अनुसार अच्छी हवामें घूमने जाना, साफ पानी पीना, (अच्छा छानकर) व साफ पानी ही से स्नानादिक क्रिया करना, व विशेषतः वांई करवट सोना चाहिये, बांयाँ पसवाडा नीचा रखनेसे जठराग्नि तीव्र होकर पाचन शक्ति सुधरती है. ब्रह्मचर्य से रहना—वेश्या परस्त्री आदिका सर्वथा सङ्ग नहीं करना चाहिये—और स्वस्त्रीसे भी अत्यंत आशक्त होकर काम—विषय सेवन नहीं करना चाहिये अर्थात् स्वस्त्री के साथ भी उचित रीतिसे वर्तांव करना चाहिये जिससे शरीरकी तन्दुरस्तीका मूल कारण (वीर्यकी रक्षा) होती है और उससे वल, वुद्धि, तेज आदि उत्तरोत्तर वृद्धि गत होते हैं, गरम जलको ठंडा करके पीनेसे व महिने में २—४ उपवास

या आंबिल–एकासनादिके करनेसे अक्सर बीमारियां नहीं होती है. भोजन रोज नियत समयपर करना चाहिये, एकवार रुचि अनुसार कुछ भूख रखकर भोजन कर लेना उत्तम है घड़ी में कुछ खाया घडी में कुछ खाया यह ठीक नहीं इससे पाचन शक्ति में बिगाड़ हो जाता है, आंतो को आराम नहीं मिलता और धीरे धीरे कमजोर हो कर वे मदाग्निका (भयंकर) रोग उत्पन्न कर देते है, अतः वारवार नहीं खाना चाहिये स्वादके वशीभूत होकर हम अक्सर अधिक खा जाते है कभीकभी मित्रों के यहा दावतों म अधिक खा लेते है यह शरीरको नुकसान पहुचाता है इसलिये रोज कुछ न कुछ भूख रख कर खाना स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों में से एक सर्वोपरि आवश्यकीय नियम है यदि कभी अधिक खानेके लिये लाचार होना पडे तो दुसरे दिन कम वा बिलकुल ही, नहीं खाना चाहिये भोजन के पश्चात दसपाच मिनीट वांई करवट सोना वहूत जरूरी है इससे हाजमा सुधरता है, भोजनमें अति आग्रह करके विशेष खिलाना हानि कारक है, क्षुधासे कम खाना एक तरहका तपभी है, और पौद्गलिक शरीरका निर्वाह भी अच्छी तरह होता है, स्वास्थ्य बिगड़नेसे धर्म ध्यान ज्ञानादि क्रियामें वाधा पैदा होती है. इस हेतुसे अपनी प्रकृति के मुआफिक भोजन करना चाहिये मांसमदिरादि व मधु (शहद) मख्खन कदमूलादि अभक्ष्य पदार्थ प्रकृतिके विरुद्ध है, अतः इनका सेवनत्यागने योग्यहै,और भोजन करते

समय कभीभी तङ्ग कपडा नहीं पहरना चाहिये, वैसेही हँमेशां अधिक खट्टे अधिक मीठे व अति चरपरे पदार्थ हानि-कारक हैं, अतः ज्यादा परिमाणमें इनका सेवन करना उचित नहीं है.

दूध,

(३६) सर्व अवस्थामें (चाहे बीमारी हो या तन्दुरस्ती) दूधका पथ्य अमृत है ।

दोहा.

वीर्य वढावन वल करन, जो कोई पूछोमोय;
पय (दूध) समानतिहूं लोकमें; और न औषध कोय ॥१॥

तुरत बल वढानेमें दूध के समान जल्दी पचनेवाला हल्का सस्ता और स्वादिष्ट पदार्थ दुसरा नहीं है, जो लोग दूधके साथ दूधके अपथ्य (दूधके दुश्मन) भोजन करते हैं, उनको फायदे के वदले कइ तरहकी व्याधियां लग जाती हैं, तन्दुरस्त हालतमें ताकतके लिये भैंसका दूध अच्छा है ।

किन्तु निर्बल अवस्थामें गायका दूधही फायदे मंद है, कच्चा दूध व वासी दूध छः घंटे वादका दूध (चाहे गरम हो या ठंडा) नहीं पीना चाहिये इससे सूक्ष्म जीवोंकी विराधना व तन्दुरस्ती में नुकसान होता है, तन्दुरस्त गाय या भैंसके ताजे दूधको स्वच्छ कपडेमें छानकर खूब गरम कर कुछ ठंडा होने वाद साफ देशी शक्कर या मिसरी डालकर इच्छानुसार सुबह शाम या भोजन करनेके वाद पीना लाभदायक है ।

दूधके पथ्या पथ्य.

दूधके दोस्त (पथ्य)

खाड, मिसरी, हरडे, वेहडा, आवळा, सोंठ मूगकीदाल मूंग व मूगके बने पदार्थ गरम मसाला, थोडी नीबूकीखटाई मनकादाख, फ्रूट्स, शहद, दालचीनी, तुळशी केशर जावंत्री, इलायची, ताजाघी, गेहूके बने पदार्थ.

दूधके दुश्मन (अपथ्य)

मूला, तैल, तोरू, गुड, उड़द, कालीमिर्च, नमक, खटाई, कुलथ, दही, छाछ, सूखेसाग, जामुन, केला, नारियल लहसन, कादा, गरम पदार्थ, तिलोंकी खल, तैल, खिचडी, नवीन खासी कफके रोग नवीन ज्वरमें दूध १–२ दिन बंद रक्खा जावे.

रवडी वासोंदी खीर के निस्वत तो गरम किया हुवा पतला दध ही वलकारक है, गाढा किया हुवा दूध फायदे के वदले हानिकारक होता है.

मंदाग्नि.

(३७) अधिक स्त्रीसभोग करनेसे, चिंताफिकर करनेसे, अधिक परिश्रम करनेसे, नियत समयपर भोजन नही करनेसे, वार-वार अधिक भोजन करनेसे अधिक तपश्चर्या करनेसे, खान-पान रहन सहनमें अपथ्य करनेसे, जिनकी जठराग्नी मंद हो गई है, जिनको पौष्टिक भोजनसे विगाड होताहै, कब्ज रहता

हैं, या पतला दस्त होता है, उनको मंदाग्निकी बिमारी समझनी चाहिये उनको निम्न प्रकारसे रहन सहन व पथ्या पथ्य रखना चाहिये,

सुबह सुर्योदयसे कुछ पहिले ताजी हवामें घूमना आव हवा बदलना साफ कपड़े पहिरना साफ मकानमें रहना दोनो वक्त दांत साफ करना.

मंदाग्निके पथ्यापथ्य.

पथ्य.

मूंगकी दाल, गायका दूध, दहीं, छाछ, साबूदाना चांवलोंका मांड चांवलोंकीफूली (धाणीपरमर) कभी कभी और थोड़ा चांवलोंका भोजन, ज्वार, अनार, नारंगी, सेव, एरंडकाकड़ी, मोसंबी, सेंधालोन, काळीमिर्च, रोटी थोडी, गायकी छाछ, जल कम पीवे, व हलका व स्वच्छ जळ पीवे, समय पर निंद्रा लेवे, हल्के जल्दी पचनेवाले पदार्थोंका सेवन, सांठा (सेलड़ीगन्ना) आदि को योग्य रीतिसे इस्तेमाल करना, व्यायाम करना, इत्यादि ।

मंदाग्निके अपथ्य.

आलु, रताळु, अरवी, भिंडी, पींड़ खजूर, वादाम वादामका सीरा, सकरकंद पिस्ता गाढ़ा दूध मलाई, रबड़ी, वासौंदी, खीर, मावेकी मिठाई, सीरा पुड़ी उड़द, चवलां—मटर बथुआ पेठा जमींकंद—काकड़ी काचरे, अंजीर, सुपारी, लाल

मिर्च ज्यादानमक ज्यादाघृत, खाना अधिक जल पीना, गेहूं-का बारीक आटा-मैदा, गंधमेले रास्तोंमें घूमना फिरना अधिक घूमना, चिताक्लेश करना भारी देरसे पचनेवाले पदार्थ खाना पीना सर्दीसे बचाव न करना क्रोध करना, जल्दी जल्दी भोजन करना मलमुत्रकी वांगाको रोकना सट्टा करना लिखने पढनेका काम बहुत करना.

पित्त प्रकृति.

(३८) जिसकी जवान फटी हुई हो,नेत्रोंमें गरमी माछुम हो, वातचीत विवाद करने की ज्यादा आदत हो, जिसकी नाडी काग कुलंग मेंडक की तरह फुदकती हुइ शिघ्रतासे चलती हो उनकी पित्तप्रकृती समझो उनको पथ्यापथ्य निम्न प्रकार से है.

पथ्य (पित्तनाशक)

सीताफल, केला, दाडम, अनार, जामफल, अच्छा-अंगूर, सिंघोडा, जामुन, मीठी नारंगी, सतरा, मूला, तोरूं, नीबू, खाड, मीश्री, ताजा घृत, थोड़ा सेंधा नमक, चणा के पदार्थ, मोंठ, मीठे पदार्थ, ठंडे पदार्थ, शरबत-गुलकंद सेव, मनकादाख, दूध, किसमिस, वादामको घोट कर पीना या वादामका सीरा बना कर खाना, शहतूत, घीयांतोरू, कैरीपाक, कोला, आंवला, जवार, गेहूं के पदार्थ,
ताजा मिठाई,सोंफ,ठ [illegible] लगाना,
सोना, जवान बलवान [illegible] जलसे

अपथ्य (पित्तकरता.)

दहीं, रायता, खटाई, खट्टी छाछ, नयागुड, अंग्रेजी चाय, तैल, सोंठ. करेला, दाणा मेथी, गरम मसाला, हींग, अद्रक, लाल मिरच, ज्यादे नमक, रूखी रोटी, ज्यादे पान खाना, खट्टे फल, तैल में तय्यार किये पदार्थ, छुहारे, वृन्ताक, हरी-मेथी, चंदलिया, खीच बाजरी, मकी, वेंगन, रात्री में जगना क्रोध करना, अधिक परिश्रम करना, गरम हवा, गरम पानी, धूपमें फिरना, अग्निका तापना, प्यास रोकना. इत्यादि.

कफ प्रकृती.

(३९) जिसका शरीर कफ प्रधान है जिनको अक्सर कफकी बीमारियाँ रहती हो जिनकी नाडी राजहंस मोर बतक मुर्गा कबूतर के चालकी तरह मंदमंद गति से चलती हो, उनकी कफ प्रकृति समझो, उन्के पथ्यापथ्य निम्न प्रकार से है.

पथ्य (कफ नाशक.)

मूंग व मूंग के बने पदार्थ, क्षारकी वस्तुएं, चना व चने के बने पदार्थ, नमकीन, गुड, हींग, सूखा अन्न, वृन्ताक, सहजनेकी फली, सोंठ, हरडे, पान करेला, गंवारकी फली, छुहारे अदरक, मधु (शहद) कसरत करना, जागना गरम जलसे स्नान. इत्यादि.

अपथ्य (कफ कारक.)

दूध, दूधकी वस्तुए, दहीं, छाछ, केला, नारियल--ठंडा-जल, ठंडे पदार्थ, आमली, बोर, बादाम, जामफल (अमरूद)

चीरंजी, काकड़ी–तिल, तैल, घृत, खाड, मिसरी, मिठाई खट्ट पदार्थ, उडद; यव, सिंघाडे, अजीर, मुनक्का दाख, छोटी दाख, अगूर, सीताफल, दाडम हरेफल, रताल्दू, तोरूं, मैदा, आलुबुखारा इत्यादि.

वात प्रकृती

(४०) जिनका शरीर वादीसे पीडित हो जिनकी नाडी सर्प, जोंक, आदि टेड़ी चालके जतुओंकी भांति तिरछी चलती हो उनको निम्न लिखित पथ्यापथ्य जानने चाहिये,

पथ्य (वात नाशक.)

तैल, मर्दन, तैलकी वस्तूएं थोडी मात्रा में सेवन करना, हींग, राई, पान खाना, अजीर चिरजी, पिस्ता, सहतूत, गवारपाठा दाणामेथी, लहसन, कादा, वालोर, गाजर, करेला, वृन्ताक, जमीकन्द, हरीमेथी आलुबुखारा, गुड, उडद, सोंठ, वाजरी, गेहूं, शरीर चंपाना, सोंठ व सोंठके साथ हरडे गोखरू पीस्ता आदिका हेमत ऋतु में वैद्यकी सलाह से पाक वनाकर खाना, वैद्यकी सलाह से चद्रोदय रस (मकरध्वज) मीठाई में सेवन करना, इत्यादि है।

अपथ्य (वात कारक.)

चावल, मोंठ, मसूर, वडे भुजिये, गंवारफली, मटर, चना, चँवला, रूखे पदार्थ, सूखे पदार्थ, ठंडे पदार्थ, सूखे साग, ज्यादे पान खाना, मूंगफली, घीयां तोरूं, जामफल,

सीताफल, सिंघोड़ा जामुन. दाडम, सांगरियां, मतीरा, चंव-लेंकी फली, अरवी, मोगरी, हराधनियां, दही खटाई, मक्की, मक्कीकाघाट, जवार, आखे मूंग. अल्पभोजन, रात्रीमें जागना वेगोंका धारण (मूत्र टट्टीको रोकना,) पूर्वका पवन, वारवार भोजन, वहुत वोलना वहुत चलना, वर्षामें भींगना चिंताशोक करना, अधिक भोजन इत्यादि हैं ।

शरदृऋतु.

(४१) इस ऋतुका समय आसो सुदी १से मगसर सुदी १ तक समझना चाहिये यह ऋतु रोगोंका घर समझी जाती है शास्त्रमें कहाहै कि "रोगांणां शारदी माता" इन दिनोंमें मलेरिया ज्वर, आमातिसार और उनसे उत्पन्न हुये रोग वहुत फैलते हैं.

पथ्य.

चांवल मूंग गौकाघृत, गुड़, वूरा मिरचमिले पदार्थ धनियां, सैन्धव, गोभी, तरबूज, मतीरा, चंदालिया, वकरीका दूध वथुआ, खीर, जामुन, केला, तोरू, सींघोड़ा, अनार, बीजोरा मुनक्का कमलगट्टे वर्फकाजल इत्यादि हैं ।

—रहन सहन—

रात्रिमें छतके नीचे सोना स्वच्छ जल पीना धूपसे वचना परिश्रम करना, खांड़के साथ आंवला, हर्ड़ें गुड़के साथ, आ-सोज सुदी और कार्तिवदी पक्षमें जुलाव लेना पंचकर्म करना विशेष लाभदायक होता है.

अपथ्य.

गर्म पित्तकर्ता पदार्थ अतिभोजन धूपका सेवन दही, छाछ, लहसुन, खट्टेपदार्थ चरपरे पदार्थ गुड, मक्किये काकडीका अधिक सेवन उड़दके पदार्थ कढी, वेंगन, भाग ठंडका सेवन कसरत खूब करना, दिनमें सोना, क्रोध करना, रात्रिमें जागना.

सर्दीकी मौसिम.

(४२)इस ऋतुका समय आजकल मगसर सुदी १से माघ सुदी १५ पुनमतक समझा जाता है इस ऋतुमे सर्दी लगनेके अतिरिक्त एसी तेज वीमारी नही होती फिरभी अधिक सर्दी पड़नेपर बच्चोंको डबेकी बीमारी तथा वीमारोंके लिये रोग वर्धक समय माना जाता है इन दिनोंमें भूख खूब लगती है शरीर उत्साहित रहता है. अतः खूब कार्य करना चाहिये, सर्दीसे बचाव रखना चाहिये गर्म कपडे पहिनने चाहिये तथा घृत गुड़ खांड के बने पदार्थ सेवन करने चाहिये. मावटे हो तब शरीर रक्षाका ध्यान विशेष रक्खा जावे पानीमे न भींगे.

पथ्य.

स्वादु और बलकारक भोजन. गेहूं उडद बाजरी तिल चांवल, बथुआ, मुग, तैल, दूध, घृत माखन छुहारे बादाम पिस्ते, मूले, अनार, प्रातः जल्दी, भोजन, तुलसीकी चाह,

ज़मीकन्द, मोगरी पापड़, पकोड़ी, चीलडे, खीचड़ी, राम-खीचड़ी, गर्मागर्म भोजन, शीघ्रभोजन करना, मिष्टान्न, पान, गर्ममसाला, वड़े, अद्रक. इत्यादि हैं.

—रहन सहन—

तपतापना, तैलकी मालिस कराना, ऊनके कपड़े पहिनना, कसरत करना, परिश्रम करना धूपमें वैठना, पीपळ और हरड़ेका सेवन, हरड़े और सोंठका सेवन. सर्दीकी मौसिममें ताकतके लिये पाक तथा पुष्टि वर्धक दवायें सेवन करना उपयोगी है.

अपथ्य.

ठंडे पदार्थका सेवन वासी अन्न रूखे पदार्थ जव, लंघन, एक समय भोजन, ठंडे जळसे स्नान, सरदीसे वचाव नहीं करना, दिनको सोना, बाहर घूमने जाना, वगीचेमें घूमना इत्यादि.

वसंत ऋतु.

(४३)वसंत ऋतुका समय फाल्गुन चैत्र मासहै इन महीनोंमें कफ़का, प्रकोप रहता है, ज़ुखाम शिर पीड़ा कांस कफ़के रोग कफ़ ज्वर न्यूमोनिया (गुजराती) आदि रोगोंके आक्रमण वहुत होते हैं पथ्य सम्वंधी साधारणसी भूलसेही ये वीमारियें धावाकर देती है अतःखानपान और रहन सहनमें विशेष सावधानी रक्खी जावे. शरीरको सर्दीसे वचाये रखना चा-

हिये गर्म कपड़े पहिनना चाहिये और ठण्डी हवासे बचाव रखना चाहिये वसन्तऋतुके पथ्यापथ्य इस प्रकार है.

पथ्य.

कफ नाशक पदार्थ सेवन करना, हलका, सूखा भोजन, जव, गेहूं, मूग, मसूर, अरहर, जवार, बेंगन, लहसन, मेथी, बथुआ, चदलिया, जमीकंद, करेला, गर्ममसाला, हींग अजवायन, पीपळामूळ, क्षारपदार्थ, ताम्बूल, सोंठका पानी, शहदके साथ हर्रे, शहदके साथ पीपळ, तुळसीकी चाह.

—रहन सहन—

व्यायाम करना, भ्रमण करना, "वसन्ते भ्रमणं पथ्यम्" शरीर चपवाना तैल मसळाना, मदउष्ण जलसे स्नान करना, केशर अगरका लेपकरना, श्वेतवस्त्र पहिनना, गाना सुनना, रात्रिमें जागना चैत्र सुदीमें जुलाव लेना, वमन करना, पसीना लेना, नस्यकर्म करना, हितकरहै जुलाव इन्हीं महीनोंमें लेना विशेष लाभदायक होता है.

अपथ्य.

खट्टे पदार्थ, भारी चीजें, स्निग्ध चीजें, मीठाई, मावेकी वस्तु, उड़द, ईख (सांठा) सेलडी, खिचड़ी, खाड़, होले, सीघाडे, आलु, भैंसका दूध, ठडे तथा वासी अन्नका सेवन करना दही, दिनमें सोना, शीतळ पदार्थोंका सेवन, ठण्डी हवामें घूमना मावटे हों तब खुले पैर घूमना, काफी कपड़े न पहिनना रातको जागना.

ग्रीष्म ऋतु.

(४४) ग्रीष्म ऋतुका समय वैसाख ज्येष्ठ मासहै, इन महीनोंमें पित्तका प्रकोप रहता है, हवा वहुत गर्म चलती है, इससे गर्मी के दिनों में ओरी, शीतला, अचवड़ा आदि रोग वहुत फैलते हैं. हैजा, लूलगना, अतिसार, अळायें, नेत्रपीड़ा आदि रोगों के उपद्रव भी प्रायः होते रहते हैं इस मौसम में जल वहुत साफ और निर्मल पीना चाहिये धूपसे वचना चाहिये. अधिक नहीं खाना, गर्मीसे वचने के लिये ठण्डे पदार्थ शरवत, ठण्डाइ; आदिका सेवन, और मैथुनका त्याग करना चाहिये.

पथ्य.

मधुर पदार्थ, चिकनेपदार्थ, हल्के पदार्थ, शीतल पदार्थ, चांवल दाल, जव, जवकी धानियें, गेहूं, मटर, कैरी, आमली, नींबु, आचार, वथुयेकारायता, दहीखांड, छाछखांड, तोरु, काकड़ी, पेठा, मतीरा, तैल, यव, कालानमक, कैरी, सूखेसाग, फालसे, चिरंजी, आंवला, आचार, सिरका, चटनी, इलायची, वथुआ, कैर, आम, खीर, लपसी, रोटा जंगलमें भोजन तरवूज, सहजनकी फली, अंजीर, विजोरा, धनिया पोदीना, हलदी, दाख, शरवत, नींवु, अनार, नारंगी, ठण्डाइ, वरफ, दूधशीतलकियारात्रिमें राव, गालकेलड्डु, केले के पत्ते में भोजन.

—रहन सहन—

ठंड़ा जल पीना, दिनको नीद लेना, प्रातःकाळ वायु सेवन करने जाना, श्वेत और वारीक कपड़े पहिनना, खसके पंखेसे वायु सेवन, पुष्प धारण, वाग वगीचों में रहना गुलाव-जल, केवड़ा छिड़कना, चन्द्रमा की चादनी में सोना, दो पहरको ठंडे कमरों में रहना.

अपथ्य

गर्मपदार्थ, तीक्ष्ण पदार्थ, तैल, उड़द, रोटा, पुड़ी खिचडी, कढ़ी, वड़े, वेंगन, लहसुन, राई, रूखे ठडे पदार्थ खाना, सूखे पदार्थ, सूर्यकी धूपमें वैठना, फिरना, रात्रिमें जागना, तापना, अत्यत तेज पवन का सेवन, सूर्यकी किरणों के तपेजलसे, स्नान करना, रातको पढ़ना, वहुत चलना, व्यायाम वहुत करना, पूर्वकी हवा का सेवन करना.

वर्षा ऋतु.

(४५):इस ऋतुका समय आसाढ,श्रावण, भाद्र और आश्विन वदी अमावस है इन महीनों में विशेष कर वायुका प्रकोप रहता है वर्षा ऋतुमें कभी गर्मी कभी ठण्डी कभी वर्षा वा गीलापन रहता है अतः खानपान और रहन सहन तत्कालिन समय के अनुसार करने चाहिये. ओढने विछौने के तथा पहिनने के कपडे सदा सूखे रखने चाहियें. समय समय पर उन्हें धुपमें रखने चाहिये, मकान में गीलापन न रहे इसका

ध्यान रक्खा जावे, मच्छरोंसे बचना चाहिये, पानीमें भीगना नहीं चाहिये. पानी खूब छानकर पीना व कपड़े गर्म पहिनना और घरको साफ रखना चाहिये. इस मौसम में मंदाग्नि आदि के रोग और शूल तथा आमातिसारका विशेष उपद्रव रहता है.

पथ्य.

जठराग्नि दीपन करनेवाले खानपान, क्षारवाले पदार्थ, खट्टे पदार्थ, गेहूं, चांवल, (वर्षा होती हो उन दिनो में बादी करते हैं) उड़द, काकड़ी, तोरूं, वेंगन, हरेसाग, छाछ-सैन्धवमिली, खांड़.

—रहन सहन—

औटाया हुवा ठंड़ा होनेपर जल पीना, थोड़े गर्म जळ से स्नान करना, हरड़े सैन्धवका सेवन.

अपथ्य

अनियमित भोजन, लंघन, दही, चंवला, उड़दकी दाल, मोंठ, मटर, चने, मसूर, जवार, कच्ची काकड़ी, घीया, करेले, पालक, आलू, भैंसका दूध, गुड़, वर्षा में भीगना, खुले पेर घूमना, नदीका जल पीना, दिनमें निंदका लेना, परिश्रम बहुत करना, धूपमें फिरना, पूर्वका पवन सेवन, व्यायाम करना, वेग से दौड़ना, तापना, ऊंचे से कूदना, धक्का लगे वा पीड़ा हो वैसा काम करना, जल में तैरना, रात्रि में जागना, बोझ लेकर चलना, वेग रोकना, इत्यादि हैं.

(४६) स्वास्थ्य रक्षा व पथ्यापथ्यके सम्वन्ध में लिखा है यह कुल लेख पढ, बुद्धिसे विचार कर, अपनी प्रकृतीके मुआफिक खानपान करें अगर आपकी समझ में नही आवे तो बुद्धिमानों से या समझदार वैद्यराज से सलाह लेकर अमल करें.

स्त्रीशिक्षा.

(४७) गृहस्थाश्रम रूप गाडी को अच्छी तरह चलाने के लिये स्त्री पुरूष रूपी दो पहिये हैं, यदि वे पहिये मजबूत, व्यवस्थित और भार सहन करने में सशक्त न हो तो वह गृहस्थाश्रम रूपी गाड़ी संसार रूपी विकट मार्ग में अपने इच्छित स्थान को नहीं पहूंच सकती यह प्रकृतिका अटल नियम है. अतः पुरूषों की तरह स्त्रियों के लिये भी बुद्धि विकास के लिये शिक्षणालयों की अत्यंत ही आवश्यकता है,

यद्यपि स्त्री शिक्षा में कुछ वर्षों से जागृति जरूर हुई है परंतु कुछ और दिलचस्पी से काम किया जावे तो जैसा चाहिये वैसा फल प्राप्त कर सकते है गृहस्थ के घरका कार्यभार बाल बच्चोंकी सेवा सुश्रूषा व तन्दुरस्ती अधिकतर गृहिणी की बुद्धि पर ही निर्भर होती है अतः स्त्रीयों को शिक्षणका उचित प्रबंध इस तरह होना चाहिये जैसे लडकोंको स्कूल बोर्डिंग कॉलेज आदि में शिक्षा मिलती है, वैसे ही कन्याव्स्थासे उनको भी कन्या पाठशाला महिला विद्यापीठादि स्थानों में शिक्षा मिलनी चाहिये. जैसे लड़कों को समाज सेवा–

देश सेवा कर्तव्य पालन धर्मानुष्ठान आदि उचित कर्तव्यों में आज़ादगी होती है, वैसे ही उनकन्याओं कोभी मिलनी चाहिये,

पश्चिमात्य प्रदेश योरप आदि में स्त्रियों को जैसी आजादगी है वैसी आजादगी आर्य संस्कृति के आदर्शभूत भारतके स्त्री समाज में कभी भी नहीं होना चाहिये,

और उन कन्या पाठशाला आदि में अध्यापिका उच्च शिक्षा पाई हुई होना चाहिये.

उसके आचार विचार आर्य संस्कृतिसे खूब रंगे हुए होने चाहिये. वह प्रकृति से क्षुद्र नहीं होना चाहिये. और मातृवत् कन्याओं को शील, पतिव्रत अड़ौसी पड़ौसी सगेसम्बंधियों के साथ रहन सहन कुटंब प्रति पालन धर्म सेवा समाज सेवा देश सेवा इत्यादि उचित विषयों की तालीम देने में सुचतुरा होनी चाहिये.

और ऐसी ही अध्यापिका की छाया में शिक्षीत कन्या वर्ग (भावी स्त्री समाज) संसार में गृहस्थाश्रम के संचालन में आदर्शरूप होगा कन्या पाठशालाओं में पुरुषको मास्टर नहीं रखना चाहिये.

इस स्त्री समाज सुधार में पूज्य साध्वी जी माहाराज भी अपने उदार उपदेश से सहायता करें यह भी मेरा नम्र अभिप्राय है.

वर्तमान स्त्री समाज (श्राविका वर्ग) से हमारा निवेदन

है कि इस पुस्तक को आदिसे अंत तक पढ़ें सुनें और बुद्धिसे विचार कर इसपर अमल करें अगर आप अपने जाति धर्मकी उन्नति करना चाहते हो तो इससे सुधार हो सकेगा धार्मिक व संसारिक कार्य्य में मदद व उपदेश मिल सके व समाज देशकी उन्नति हो ऐसे भजन गीत बनाये एवं गाये जावें तो बड़ा लाभ होगा, खराब व अपशब्द की गालियां गानेका रिवाज सर्वथा बंद करदेनाही बुद्धिमानी है.

लज्जा के हेतु लम्बे लम्बे घूंघट तानना और गाली गाने के समय अपने सास श्वसुर व पति वल्के मातापिताओं के आगे निर्लज्जा पूर्वक बकबक करना जंगली जमानेका निशान है,

सगाई विवाह.

(४८) पाठकों ? सगाई का अर्थ सम्बन्ध होता है और वह योग्य स्त्री पुरुषों के साथ किया जाता है, कन्या अवस्था के व्यतीत होनेपर युवा अवस्था के आरंभ से ही किसी योग्य उच्च कुलके पुरुष के साथ सगाई (सम्बंध) की विधी मा-बाप कुटंब के बडेरे करते है और उस उचित सम्बंध से बंधे हुए युवती युवान आ जन्म अपने इस संसार में-मर्त्य लोक में स्वर्ग लोकका सा आनंद अनुभव करते है और प्राचीन काल में दम्पति से उत्पन्न हुई संतती वीर वीर दृढ़प्रतिज्ञ गुणग्राही साहसी चारित्र शील निर्भीक नीतिज्ञ परोपकारी इत्यादि अनेक सद्गुणों से भरीं हुई देश भरमें अपने आदर्श

बुद्धिबल से उच्चकोटि के स्थानको पातीथी आजकल लिखते हुए खेद होता है कि दुस्सम काल के प्रभाव से धन के लोलुपी मां बाप अपने पापी पेट व भोग सामग्री की पूरती के वास्ते अपने प्यारे बच्चों को अन मेल सम्बंध, बालिका को (बुढ़े के, बालक के, मूर्ख के दुर्गुणी के, दुराचारी के अकुलीन के, रोगी के, दरिद्री के इत्यादि) जैसे तैसेके साथ कर देते हैं और इस तरह होने से वह विचारी लघुवयवाली बालिकाओं का संसार घोर नरकावास जैसा बन जाता है हालां कि वह ज्यादातर, निर्बीजही होती हैं. यद्यपि कोई संतान होता भी है तो निर्बल, निस्तेज, नपुंसक, कायर, व्यसनी, निर्विवेकी, मानो, नारकीका नेरइया ही नहो ? वैसी वेडोल अनेक दुर्गुणों से भरे हुए होते हैं क्यों के जितने जितने कारण पुष्ट होंगे उतने उतने ही कार्य्य भी पुष्ट होंगे जितनी कारणों में न्युनता होगी. उतना ही कार्य भी कमजोर रहेगा, जब कि मां बाप में ही योग्य आदर्श, बल, बुद्धि, तेज, प्रेम, विवेककी मात्रा का अंश भी नहीं है तो फिर उनसे उत्पन्न होनेवाली संतती में वे सब सद्गुण आवे ही कहां से? सगाई है वह एक महा दीक्षा है, और उस दीक्षा की शिक्षा पूरी तौरसे जबतक न पाई हो तब तक उस धोंसरीमें अशिक्षीतों को जोड़ देने से भारत की और विशेष कर जैनियों की दयनीय दशा हो रही है उसे देखकर कौनसा पाषाण हृदय भी दो बूंद आंसू नहीं बहावेगा.

आजकल बाल्यावस्था, और वृद्धावस्था आदि के वे जोड़ विवाह की कु रीति अपनी जाति में ऐसी घुस गई है कि उसको नाश करने के लिये अनेक वार कॉनफरेंस ने ठराव किया अप्पन लोगोंने भी इस विषय में हा/हां की मगर पैसे के लोभ से और अज्ञानता के अंधेर से उस ठरावका अमल नहीं किया, इस में दूसरे पर दोष नहीं है सिर्फ जाति के नेता इस दिशा में अपनी कुंभकर्णी निद्रा को त्याग कर कार्य्य करने में कटिबद्ध होवे तो निःस्संदेह जैन जातिकी तरक्की हो सकती है. यह तो साफ तौरसे मालूम हो गया है कि वे जोड़ विवाह करने वाले ने नही सोचा, नही देखा, सारी उमर तन्दुरस्ती, घरका भार, सतानो का मूल इसी सगाई विवाह पर निर्भर है विवाह के लायक कन्याएं १३–१४ वर्ष की और लड़के, १६–१८ वर्ष के (अगर तन्दुरस्ती (अच्छी हो तो) समझे जाते है.

इसी तरह ४० वर्ष से अधिक उमर वालेका विवाह (अगर तन्दुरस्ती अच्छी है तो भी) अनुचित है, कमसे कम कन्या १२ वर्ष की और लड़का १५ वर्षका विवाह होते समय होना ही चाहिये, और पुरुष का ४५ वर्ष से ज्यादे उमर में विवाह हर्गिज नही होना चाहिये जाति में इसका इंतजाम जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी करना परम कर्तव्य हैं.

बड़ी कन्यासे छोटे लड़केका सगाइ विवाह अत्यन्त हानि

कारक होता है. इसके नतीजे हरएक तरहसे आप लोग देखते ही हैं. अगर किसी कारण से दूसरे के भरोसे पर अयोग्य सगपण हो गया हो तो दोनों सम्बंधियों को अपने बालबच्चों पर दया करके छोड़ देना मुनासिब है, अगर एसा न करेंगे तो उनका जीवन दुःखमय बन जायगा.

(४९) कई लोग लोभ वश (देने में व लेने में) बुरी जगह जा गिरते हैं. जिनको अपने लड़कों के लिये लड़कियां बहुत मिलतीं हैं. वो तो लड़की के माता पिताओं से रूपया माल खर्चा मांगने में व कन्याविक्रयवाले लड़की का रूपया लेने में अन्धे हो जाते हैं. भाइयों? रुपया तो थोड़े दिन काम आवेगा, परंतु वरको सुयोग्य कन्या और कन्या को सुयोग्य वर उमर भरके लिये देखना है, रूपयों के रिवाज में, अगर सुयोग्य कन्या अच्छी खानदान रूप गुण सुशीला होते हूएभी गरीब के घर हुई तो वह धनवान के घर नहीं जा सकती, सगाई आदि के मौके पर ठहराव आदि करने व रुपया माल मांगनेवाले दोनों (लड़के व लड़की के लिये रु० मांगने व लेनेवालों) की गलतीसे ही इसी तरह कुजोड़ विवाह की संख्या बढ़ती जाती है इसीसे समाज दिनो दिन अवनति के गहरे गड्ढे में जा गिरता है; और दूसरो से पददलित होता है, इस लिये कन्या ८ की व लड़का ११ वर्षका हूए बाद सगाई करना उचित है.

जैन संस्कारानुसार विवाह करना

(५०) पाठकों ? जिस जाति के अंदर अप्पनने जन्म लिया है, उस जाति के संस्कारों से विवाह आदि क्रिया न करना मानों अपने हाथों से ही अपनी जातिका द्रोह करना है. जब कि जैन सस्कार विधीकी पुस्तकें मोजूद हैं, तो भी अन्य विधर्मियों के सस्कार विधी से विवाह आदि क्रिया करने से विना किसी कारण मिथ्यात्व लगाना है, और उस मिथ्यात्वसे भवोभवमें दुःखी होना पड़ता है कहाभी है "स्वधर्मे निधन श्रेयः परधर्मो भयावहः" अर्थात् अपने धर्म में मरजाना भी कल्याण रुप है और परधर्म तो भवको करनेवाला होता है." इसलिये अपने धर्मानुसार किये हुए पवित्र सस्कारों से सस्कारित होना चाहिये दूसरोंके त्याज्य सस्कारोंसे कभी भी अपने आत्मा को मलीन नही करना चाहिये दूसरों के सस्कारानुसार विधि से विवाहादि क्रिया करना सचे जैनियों के लिये लज्जाका विपय है, अतः जैन सस्कारानुसार ही विवाह और दीपावली पूजन शारदापूजन, दवातवही पूजन लक्ष्मीपूजन कराना चाहिये, इस कार्य्य के लिये पुस्तक पंडितादि कों का पहिले इंतजाम करलेना अच्छा है,

जरूरी खर्चे में कंजूसी और विना जरूरतके कार्य्य में फिज़ूल खर्च.

(५१) अधिक तर जैनी इतनी वे परवाही से खर्च करते हैं कि जिससे पैसा भी जावे और आयंदा को अनर्थ पैदा हो, संसार में निंदा हो पस की तंगी से दरिद्रता आदि तथा समाज को अनेक दुःख उठाना पडे और धर्मकार्य्य के लिये पैसा नहीं वचने से परभव में महान् घोर दुःख उठाना पडेगा, क्यों कि दूसरों की देखा देखी (खानेपीने की वरावरी वगेरा) रीत जीमण वगेराः करने के लिये आवश्यक्ता होने से कन्या वेचने तथा चोरी जैसे घृणित कार्य्य करने पड़ते हैं.

फिजूल खर्च रोकने का प्रयत्न समाज में वहुत दिनों से हो रहा है. परंतु अभीतक वंद नहीं हुआ कहीं एक रुपमें वंद होता है तो दूसरेनये रुप में फिर चल पड़ता है.

जरूरी खर्चों में जैनी इतनी कंजूसी करते हैं कि उसके फल स्वरुप उनको अनेकानेक दुःख उठाने पड़ते हैं यहदोनों वातें एकसां हानिकारक है आर अक्सर देखा गया है, कि इनदोनों का साथही रहता है, जो आदमी किसी कार्य्य में वे परवाही से खर्च करेगा उसको दूसरे आवश्यक कार्य्यों में भी कंजूसी दिखाना पडेगा, इन दो सतरों का अर्थ पर ध्यान देकर मनन करेंगे तो आपको वहुत फायदा होगा.

आमदनी से अधिक खर्च रखना व फैशन से रहना यह दोनों बुरी वातें भी इसीक्रम समझी में सामिल है, आधुनिक सभ्यता के जमाने में भारतवर्ष फैशनमें गारत होता जा रहा है, जैनियों समलो और उटो यदि यही परिपाटी रही तो आप के पायमाल होने में कोई भी सन्देह नही है.

(५२) वुद्धिमान ? परिमित व्ययसे कम खर्चमें जितना सुखचैन आराम इज्जत अच्छी गति पा सक्ते हैं खर्चीले लोगफिजूलखर्चो वफेशनमेंभी उतना सुखचैन आराम आदि नहीं पासक्ते पाठकों ? हमारे इस लेखका मतलव यह नही है, कि आप कृपण वनें, और इस विषयम कई वर्षोसे सज्जनगण प्रेरणा कर रहें है. कई जगह ठहरावभी हुए, मगर चलते नहीं कइ वुद्धिमान पुरुषोंने स्वीकार किया परंतु उनको लज्जा उठानी पडे इन वाताका कारण यही है कि सौ में २–४ घरवालोंने किया वाकी ९६ घरवालोंने नहीं किया इसके वावत अदरुनी वात यह है कि हरएक जगह श्रीमत मध्यम निकृष्ट (ज्यादे धनवान व मध्यम अवस्था वाले मामूली, व तंग हालत वाले) तीनों दर्जे होत है उपरोक्त कार्य रूपी गाडी चलानेमें तीनो सरदार इस लिये टाला लेते है कि

(१) उत्तम धनवान लोग अपने वभव अपने व्यवहार, नाम, कीर्तिदान,सगाचारादिकी वजहसे,उनको पूछो तो फर्माते है कि हमारे घरसे नहीं हमको कम खर्चकी जरूरतभी नही,मगर धनाढय पुरूषों ? वुद्धिसे काम करो जो विगडे श्रीमान् अभी तक

हालतमें हैं वेभी किसी समयमें आपसे बढ़करथे और उनदिनों उन्होकोभी यही मालूमथा कि हमारी स्थिति हमेशा एसीही रहेगी जिससे हमारी संतानोंको समॅनेका मौका नहीं होगा. रीतकरयावर व्याह आदि के मौके पर जायदाद नहीं वेचेंगे वल्के देखादेखी एकने एकसे बढ़बढ़कर काम कियेथे, यही मौका किसीवक्त आपपर या आपकी संतानो पर आयगा, लक्ष्मी चंचल है, आप कम करोगे तो दूसरे जल्दीही सुधर सकेंगे,

(२) मध्यम अवस्था वाले यह विचारते हैं कि अप्पन अपने सिर क्यों बदनामी लेवें अन्य लोगोंको क्यों नाराज करें कम खर्चे करने से घर (साहूकारोंमें) का भरम निकल जावेगा, अपना जो कुछ कार्य्य हे करही लेवें आगे औरोंकी और जाने मगर उनकी यह सख्त गलती हे आप दुःख देख दूसरोंको दुःखी करते हैं.

(३) तंग हालतवाले वह क्यों विचारे उनको तो फायदाही है क्योंकि उनके पास वो खर्च करनेको नहीं दूसरे करें उसमें उनको कुछ हरएक तरहसे फायदाही पहुंचे, बल्कि जो इस कार्य्यकी रोकका काम उठावे उसकी निंदा करे मगर वह लोग भूलमें पड़े हुए हैं.

भाइयो ? आपके व आपकी संतानो के फायदे के लिये ही यह सारी कोशीशेंकी जाती है, अगर आपके भाइयोंके पास रूपया (उपरोक्त फिजूल खर्चीका) बचेगा तो हरएक तरहसे आपही के काम आवेगा.

धर्मकार्यमेंभी किस तरफ खर्चा घटाना वढाना.

(५३) ससारिक कार्यकी तरह धर्मकार्यमेंभी किस तरफ खर्चा कम व किस तरफ ज्यादे करनेकी आवश्यक्ता है, महानुभावो ? जैनियोंकी इस हालतमें यह उम्मेद तो कठिन है कि आपलोग धार्मिक कार्य व साधारण कार्य के लिये नवीन खर्चा लाग बांधकर नवीन संस्था कायम करदेंगे. इस लिये मेरी राय है कि खर्चा कम (जिस जगह जैसा मौका हो) करनाही अच्छाहै जैसे बडे बडे संघ महोत्सव, संघ यात्रा, वर घोड़ा, आदिमें व जहां मंदिरों तिर्थस्थानों में अगणित द्रव्य पडा हुआ है, और वहां कुछ ही जैनेत्तर लोगोंका कब्जा है, व आयदा (अन्य लोगोंके कब्जेका) अंदेशा है, ऐसी जगह अब भंडारादिमें रुपया जमा कराना देना आदि बंद रक्खा जावे महाशयो ? मेरे इस लेखका यह मतलब व भाव नहीं है, कि आप तिर्थक्षेत्र देव द्रव्य न बढावें बल्कि यह मतलब समझें कि जहां ज्यादे जरुरतहै वहा लगावें.समुद्रमें वृष्टी जैसे धनवान को दान करनेके निस्बत उपजाऊ भूमिमें मौसमपर वृष्टी सम ज्ञानवान निर्धनोको दान करना अति उत्तम व ज्यादे लाभदायक है।

धार्मिक संबंधीमें सबसे ज्यादा सर्वोत्कृष्ट पुन्य उपार्जन करनेके लिये इस जमानेमें जैनियोंके वास्ते साधर्मी भाईको आराम (धन धंधा मुलाजमत विद्यादानादि) पहूंचाना ही है. हरएक कार्यका मुख्य अंग (श्रावक श्राविका) यही है यही

स्वामी वात्सल्यहै, और इसीसे सम्यक्त्व निर्मळ होताहै व संसारं कीर्ति वढतीहै इसीमेंसे साधुसाध्वी निकलेंगे इसीमेंसे धर्मधुरंध धर्मोपदेष्टा पुन्यवान वो महानुभाव निकलेंगे जो औरऔर श्रावव श्राविका व साधुसाध्वी चतुर्विध संघकी सेवा करेंगे यही अं धनधान्यसे परिपूर्ण होगा तो मंदिरोका उद्धार महोत्सव सं कॉन्फरैंस, यात्रा, अच्छे अच्छे स्वामी वात्सल्य विश्व विद्यालय औषधालय, पुस्तकालय, आदि स्थापित वगेरः करके आपर्ह लोगोंकी सेवा करेगा.

मंदिरादिकों में खर्चा लगाने के साथ साथ मंदिरादिकें के मानने पूजने वालोंकी उन्नतिमें खर्चा करना ज्यादा लाभ- दायक होगा.

यह खर्चा, खर्चा नहीं है बल्के जैन समाजको वढानेके लिये एक तरहकी खेती (कृषी व्योपार धंधा) है पहिले खर्चकरने हीसे फिर फायदा होता है उसी तरह इसकेभी भ- विष्यमें वडे भारी फायदे (श्रावकरूपी वृक्षके अनेक फळ, (संतान) होकर फिर उनके अनेक वृक्ष (श्रावक श्राविका) खडे होंगे.

प्राचीन मंदिरोंकी मरम्मत के लिये जिर्ण मंदिरोद्धारकी कमेटी खाता फंड कायम है उसी तरह निराश्रितोंको आश्रित मदद धंधे लगानेके वास्ते फंड जैन वैंक कायम करने चा- हिये, जहां जिर्ण मंदिरोद्धारमें मदद दीजावे वहां उसके देख-

रेख पूजाकरने वाले (अगर नहीं हो तो) की आबादीकीभी जरूर कोशीश की जावे.

बडे बड़े शहेरोंमें व गावोंमें धार्मिक व साधारण कार्य्य फंडमें द्रव्य जमाकराने व खर्च करनेकी सस्था मंडल कायम करना व रखना चाहिये,

इससे फिजूल खर्ची व कुपात्रदान बंद होगा और धर्मके नामपर कई ठग ठगाई करते फिरते हैं यहभी बंद होगा परंतु इतना जरूर याद रहे की इस्के कार्य कर्ता अच्छे अनुभवि व उदार दिलहो वर्ना फायदेके बदले नुकशान होनेका अंदेशा है.

(५४) कलम नंबर ५१–५२–५३ में लिखे बाबत कुछ उदाहरण तरीकेसे चंद बातें पाठकोंको जल्द समझनेके वास्ते लिख देताहूं,इस्के सिवाय जहा जैसा मौका हो खर्चा कम करें.

व्याख्यानों में व और जगह मिठाई श्रीफल आदिकी प्रभावना देते हैं. इससे कीड़े कीड़ी मकोडे आदि की हिंसा व आरंभिक कार्य्य करना पड़ता है अगर उस्के बदले पुस्तकें (छोटी बडी जिससे धार्मिक संसारिक ज्ञान मिले) या बादाम अन्टी (नंडे) वगेराः जो मुनासिब हो दिये जावें केशर शुद्ध चढाइ जावे चाहे थोडी ही हो. और उस्के बजाय चंदन चढाया जावे. *

* नकली केशरमें अनेक अपवित्र वस्तूए डाली जाती है और शास्त्रों में चंदन चढाने का वर्णन किया है,

जहां मंदिर हो वहां नवीन मंदिर व मंदिरोमें विना जरूरत कांचके झाड़ आदि विदेशी सामान लादियोंमें रुपया न लगाकर वैराग्य भाव के चित्र लगाये जावें व जीर्ण मंदिरों की पुख्ता मरम्मत कराई जावे,

पूजा प्रक्षाल अंधेरे में न होकर सूर्योदय वाद करना अच्छा है, (अक्सर प्रक्षालन सूर्योदय वाद ही होते हैं किसी जगह जल्दी करते हैं, इस वास्ते लिखा है, रात्री में प्रक्षाल करने में शास्त्र विरुद्ध व हिंसा का वंध है.

वालवच्चों के गर्भावस्थामें आगरणी व जन्मोत्सव मानता आदि की व व्याह आदि हर एक कार्य्य में खर्चा कम कर उनके जन्मसे युवावस्थातक पढ़ाने लिखाने तन्दुरस्त वनाने के कार्य्य में लगाया जावे गुरुकुल वोर्डींगशाळा, पाठशाळा कन्याशाळा उद्योगशाळा आदि में रुपया लगाया जावे,

कस्यावर (नुक्ता) छे मासी वर्षी श्राद्ध आदिकी रसम खर्च कतई मेटकर जाति फंड व कान्फरेंस फंड में रुपया दिया जावे.

वारीक व रेशमी व फैशन के चटकीले कपड़े व वन सके तो भीलों के वने कपडे वंद कर देशी खादी व चलाऊ वटेढ़ी वुनावट के* सूती ऊनी वस्त्र काममें लाये जावें अगर रेशमी

---

* टेडी वनावटके वस्त्र चलाऊ होते हैं जैसे मक्खन जीन, जीन, व टुईल व काश्मीर पंजाव के दूशाले मारवाड़की कम्वले वगेरः

वस्त्र ही पहनी होतो बंगालके व मखमल के कपडे काम में लाये जावें,

सिगरेट बीड़ी व ज्यादे पान ज्यादे फ्रूट फैन्सी तेल लवेंडर सोडा लेमन बरफ तमाखू-छोडकर गर्मी में बादाम मीश्री गुलाब के फूल की पत्ती घोटकर व शर्दी में दूध घी मीश्री बादाम-लिया करें.

स्नान के वक्त सिर वा सिर के बाल काली मिट्टीसे धोवें तो दिमाग व नेत्रोंको तरावट पहूचे. और फैन्सी बालोंके निस्वत साफ सिर (मस्तक) या छोटे बाल रखना और सिर व बदनपर तेलकी मालिश करना फायदेमद है।

मुकदमें बाजी,

(५५) मुकद्दमे बाजीमें जैनीही तो क्या सारा भारतवर्ष दुःखी हुवा है इसमें लाखों रुपये जैनियोंके घरसे हरसाल अन्य लोगोंके घरमें जाते हैं.

और सरकार भी यह नहीं चाहती के आपलोग मुकद्दमें बाजी करें, बल्के वो तो इस खोटे कार्य्यको घटाना चाहते हैं, क्यों कि, रिआया, मुकद्दमों की परेशानी, रुपयोंकी बरबादीको जमीन की काश्त (खेती) में, वव्योपारमें व खानिज पदार्थो की खोजमें, व हुनर उद्योगमें, व राज सेवा वगरह में लगावें तो राजा प्रजा दोनो को फायदा हो. इस लिये रसूम (कोर्ट फीस) हैं ०) खर्च होता

है, उसमें सिर्फ १०) ही राजकोष में जाकर शेष अन्य जगह जाते हैं दस रुपया भी न्यायाधीशों के वेतनादि मे खर्चा कर देते हैं,

आपसकी मुकद्दमें बाजी से बचनेका उपाय तो उपर की कलम नंबर २९ में लिख आया हूं. मुकद्दमे बाजी भी एक तरह का व्यसन है, कभी कभी किसी किसी मामले में किसी को फायदा मिलने से इस कार्य्यका शौक बढता है, मनुष्य भवका अमूल्य समय कई तरह के दाव पेचरूपी अच्छे बुरे विचारों में गमाते हैं कितना ही पैसा खर्च करते हैं, धार्मिक व संसारिक कार्य्य छूट जाता है, अंतिममें इस्का सारांश यह देखा गया है कि इस व्यसनवाले लखपति क्रोड़पति भी दिवालिये भिखारी हो गये हैं.

(५६) मुकद्दमों मे बहुधा देखा गया है कि (१०००) वसूल करने की गरज से न्यायाधीशों के पास न्याय लेने व रुपया दिलाने के वास्ते अर्ज (दावा) किया.

न्याय व न्याय के पुरावे सबूत दिखाने में व न्यायाधीशों को न्याय समझाने के वास्ते लड़ते लड़तेही म एक हजार के बदले २०००) रुपया खर्च हो कर बबाद हुए और यही हालत प्रतिवादी (मुद्दालों) की है इसके लिये कुछ दोष तो न्यायाधीश व न्याय नियम यानी कानून बनाने वाले राज कर्मचारी व उसमें सलाह (मशवरा) देने वाले मेम्बर सा-

दिवान व अखीर दोष इनको (मेम्बरों) चुनने रखनेवाले आप (प्रजा) व राजा महाराजा का ही समझना चाहिये.

प्राचीन समय में राजाओं के दिलमें इस बात का फिक्र रहता थाकि कोई जीव मेरे पास न्याय लेने आवे वो बेन्याय वापिस न जावे. वह सच्चा न्याय किस तरह पावे, सच्चा न्याय किस तरह होवे,सच्चा न्याय थोड़े समयमें किन किन कारणोंसे व कार्य्यों से होवे. न्याय करानेवालेको तकलीफ न होवे मगर प्रचलित समयमें किसीकिसी जगहकी न्यायालयों से यह बातें कोसों दूर है.

न्याय ग्रंथ तक एसे प्रचलित होते हैं कि उनको समझने समझाने ही में खर्च के मारे बर्बादी होती है.

प्रजा के पढने पढाने समझने समझाने की बात तो खैर दूर रही परन्तु राजा महाराजाओं के स्थापित किये हुए न्याधीशो तक के समझ में नहीं आवे और उनके न्याय को उनके उपरी न्यायाधीश अनुचित सिद्ध करते ह कानून कर्ताओंका खेल तमाशा और प्रजावर्ग (मुकद्दमेंबाजों न्याय करानेवालों) की खराबी. इससे व्योपारको व गृह ससार व धार्मिक कार्य में बड़ा भारी धक्का पहुंचा है।

भंग गांजा अफीम तमाखु आदि नशे बाजी,

(५७) जैनियों की जाति में मास मदिरा का तो सर्वथा त्याग ही है परन्तु उसका छोटा बच्चा भग गाजा अफीम तमाखू

आदि नशेकी चीजों के खाने पीने का प्रचार जारी है, और छोटे बड़े सर्व जैनी भाइयों में थोड़े ही इस से बचे हैं, इन नशो में धार्मिक व संसारिक व शारिरिक कई तरह के नुकसान हैं. नशे बाजों की आदत व उनके छुड़ापेमें उनके शरीर को आप देखते हो तो क्या व कैसी हालत हो जाती है वो खुद बहुत पछताते हैं मगर उनसे तो छूटना मुश्कील उनकी एसी हालत बातें देख कर भी नवयुवक व बाल्यावस्था वाले इन चीजोंसे दूर नहीं रहते बल्कि आपखुद व अपने मित्रों को इस कार्य्य में जोड़ते हैं, बल्के और भी ज्यादे ज़िद [मनवार] कर करके खिलाते पिलाते हैं इस हानिकारक खानपान की निंदा बाबत जितना भी लिखा जावे थोड़ा है. बिगड़े उनको सुधारना चाहिये. मगर खैर बिगड़े सो बिगड़े अब आप लोगों से हमारा तो यह निवेदन हैं, कि अपने संतानो को इस बुरे खानपान से बचावें तो अच्छा है.

(५८) सरकारने इस नशे बाजी के कार्य्य में स्वार्थ परमार्थ दोनो करलिये यानी नशेकी रोकमें प्रजाको छुड़ानेकी नियत व ठेके में रूपयोंकी आमदनी, मगर आपलोग अपनी बिरादरीमें कुछ इंतजाम नहीं करते यह लज्जाकी बात है, कइ व्यसनियोंका यह खयाल होगा कि इन चीजोंसे हमारी तन्दुरस्ती सुधरती है, स्फुरती आती है, और विलासमें आनंद मिलता है, वगेराः मगर खयाल उनका गलतहै, रात्रीमें नशा-करने वालोंकी हालत सुबह देखियें. क्यों कि आजकलके समय

में महंगाइकी वजहसे घृत दूध कम मिलनेसे शरीरका लोही मास वीर्य बल्कि कलेजा तक सूख जाता है.

(५९) हिन्दू संसारमें विशेषकर जैन संसारमें इन नशोंकी स्त्री समाजमें कतइ बंदी है अतः जैनी स्त्रियें नशेको नहीं करती,

जो नशा नही करता है उसके पास यदि कोइ नशे बाज आकरके बैठताहै तब उसे वह बड़ी घृणाकी नजरसे देखताहै, और नशे बाज निकम्माही अपने नशेकी बदबू फैलाता है, तो उससे नाराज होकर उसका तिरस्कार कर देता है, यह मत्यक्ष में दृष्टीगोचर हो रहा है, इसी तरह जब कोई नशेबाज अपनी स्त्रीके पास जाता है. अर्थात संतानोत्पत्तिका मयत्न करता है, अथवा अपनी प्यारीसे मेम प्राप्त करना चाहता है, उस समय में वह स्त्री यदि खुले दिलवाली होगी तो उचित रीतिसे अपने पतिको स्पष्ट शब्दोंमें कह देती है कि आपके मुहसे गध आता है, या आप पागल बन रहे है, जिससे इस समय मेरे हृदयमें दुःख होता है, अतः आप नशा त्याग दें. और अगर स्त्री बेचारी किसी कारण वश (लज्जा, पतिडर वगेरह) साफ जबान से न कह सके तोभी वह दिलमें तो दुःख मानती ही है.

पाठकों एसी अवस्थामें गर्भोत्पत्ति (औधान रह) हो जाय और उससे जो संतान पैदा हो वह मकृतिके नियमसे बद सूरत मूर्ख, दुराचारी, वगेरह होते है.

(६०) यह वात वैज्ञानिकोंने सिद्ध करदी है कि जिस समयमें स्त्री और पुरुषके चित्तमें जैसे जैसे परिणाम रहते हैं उनकी ही छायां होने वाले संतानोंमें होती है प्यारे पाठकों यदि आपको निजी अनुभवसे यह बात सच्ची मालुम देती है और अपने संतानोकी सुंदरता आदि चाहते हैं तो इस सत्यानाशी नशेको शीघ्रही त्याग करें और अपने मित्रोंसेभी छुड़ा दें. विरादरीसेभी इसके रोकका इंतजाम होना जरुरी है प्रायश्चित आदिके तौरपर कुछ टेक्स वगेरह या जैसा जहां मुनासिब मौका हो किया जावे.

कई जातिमें तो यह खानपान वंदभी हुवा है अतः उनको धन्यवाद है.

भारतवर्ष में क्रोड़ों रूपये रोज इसमें स्वाहा होते हैं. हम तो अंग्रेजी चायको भी व्यसनमें शुमार करते हैं, इसके वजाय तुलशी की चाय दूध के साथ पीवें तो अच्छा है.

इन व्यसनी चीजोंके वजाय त्रीफला (हरड़े, वेहड़ा, आवळां) सोंठ, घी, दूध, मीश्री वादाम आदि वैद्यकी सलाह से खाई जावे तो आनंद मिले वीर्यवर्धक पौष्टिक कुछ दवाओंके नाम लिख देता हूं,

उड़द, केशर, इलायची, जावंत्री, वदाम, पिस्ता, तालमखाना, विदारीकंद, क्रोंचवीज, गोखरु, सफेद मूशली, सालममिश्री, वंसलोचन, वसंतमालती, आदि और सवसे

बढिया चंद्रोदय रस (मकरध्वज) है, खात्री लायक अच्छा होना चाहिये.

(६२) धातुकी निर्बळता सबधी रोग इस जमाने में प्रति सेंकड़ा ८० स्त्री पुरुषोंको है. किसीको किसी रूपमें तो किसीको दूसरे रूपमें

इस रोगकी परिक्षा व मुख्य उपाय यह है कि कब्ज न होने दे सुबह शाम दस्त साफ आनेकी औषधि करे जिस्का दस्त साफ है, उसको यह बिमारी कम होगी दस्त साफ आनेकी कुछ सोम्य औषधिया लिख देता हूं स्वास्थ्य रक्षाके लेखको पढ़कर इस लेखको पढें.

(१) छोटी हरडे, गुलाबके फूल, कालीदाख, बादामका मगज सोंफ इन चीजोंको बराबर ले के कूट पीसकर आधे आधे तोलेकी गोली बनाली जावें उनमें से रातको सोते समय या शामको एक या दो गोली खानेसे दस्त साफ होगा.

(२) हरड़े बेहडा आवला इन चीजोंको समान भाग लेकर तीन मासे या छे माशे तक पानीके साथ खानेसे दस्त साफ होगा.

(३) एक दो हरडे का मुरब्बा अथवा एक मुठ्ठीभर बीज सहित काली मुनका के सेवनसे दस्त साफ होता है.

(४) सबेरे अथवा रातको या शामको दिनमें दूध अथवा पानीमें एक दो चम्मच ओरलिव आइल बादाम रोगन या

एरंडीका तेल डालकर पीना या गुड़ अथवा रोटीके साथ गुड़ खाना* भी कब्जीयत को मिटाता है.

(५) एकदो औंस ताजादाखका रस निकालके शक्कर या नमक मिलाकर पीना लाभदायक है.

(६) दाख हरड़े और शक्कर या सेंधा नमक इन तीनोंकी गोळी बनाके एक तोला प्रमाण खानेसे दस्त साफ होगा.

(७) गुलकंद एक दो तोला खाकर गरम दूध पिवें.

(८) बड़ी हरड़ सनायकी पत्ती और रेवंत चीनीकों बराबर वजनमें लेकर बारीक पीसकर बेरके प्रमाण गोली बनाकर रातको सोते समय गरम दूध या पानीसे एक दो गोळी खावें प्रातःकाल दस्त साफ होगा.

(९) पाचक सारक चुर्ण.

सोंठ, सनाय, हरड, सेंधानमक, निसोत संचलनमक और सोंफको समान भाग लेकर बारीक पीसके रक्खे रातको सोते समय तीनचार माशे खानेसे दस्त साफ होगा.

(१०) ताकतकी दवायें ले उन दिनोंमें सम्पूर्ण प्रकारसे ब्रह्मचर्य पाळना चाहिये.

(११) ताकतकी दवाये लेनेपर खटाइ, आचार, रायता, काचरी. अमचूर, आदि नहीं खाना चाहिये. किन्तु पाचन शक्ति अनुसार घृत दूध और खांडका सेवन किया जावे.

---

* गर्म प्रकृती—पीत्त प्रकृति व चेत्र वेसाक ज्येष्टादि गर्म ऋतुमें गुड़ खाना बुरा है.

वर्ना फायदे के वदले नुकसान होगा. साधारण दवा पर पकी खटाइ (सागमेंदही) थोडे प्रमाण में ली जा सक्ती है. पर तेज दवा होतो पकी भी नही लेना चाहिये खटाइ से दवा का गुण नही होता हे तथा कई एसी दवाए भी हे कि उन्से शरीर भी विगड जाता हे अतः ताकतकी दवा लेने पर पथ्य की ओर विपेप ध्यान रक्खा जावे.

(१२) सोमळ, भस्म, हरतालभस्म, पारा, तावाभस्म, भिलावा, हिगळु भस्म, आदि तेज दवाए ताकतके लिये कभी नहीं लेनी चाहिये.

(१३) ताकतकी दवायें शीतकाल में बोत फायदा करती हे कारण उन्की तीव्रता तेजी गरमी, सर्दी के कारण जान नहीं पड़ती दुध और घी भी खाये पच जाते हैं और शरीर भी उत्साहित रहता हे

(१४) ताकतकी दवा लेने वालोंको शुद्ध हवा में रहना चाहिये. और शुद्ध विचार रखना चाहिये,

(१५) धातू क्षीणका रोग एकदम जल्दी नहीं मिट जाता हे अतः कोई भी दवा डेढ दो महिने लेने पर लाभ करती है.

(१६) वीर्य श्रावको रोकने और वीर्य बढाने के लिये सबसे अच्छा और [illegible] उपाय ककरत है कसरत से वी[illegible] बढता है और [illegible] ब्रह्मचर्य और शुद्ध मनना उसे बचपनहीसे [illegible] करना चाहिये,

वावस्था में भी कसरत चालू रखनी चाहिये, विर्यको लाभ पहूंचाने वाली कसरत वैठक की कसरत है, प्रत्येक मनुष्य को इसका अभ्यास करना चाहिये,

वीर्यश्राव और स्वप्न दोषका उपाय,

जिस्के वीर्य श्रावका रोग हे वा स्वप्न दोष वार वार हो जाता है उसे अपने रहन सहन में निम्न प्रकारसे सुधार करना चाहिये जिस से वीर्य श्रावका रोग जल्दी दूर हो.

(१) पवित्र विचार रखने चाहिये.

(२) विषयी वातो में मन नहीं लगाना चाहिये दिन मे एसी वातों का हरदम विचार रखने से ही प्रायः स्वप्न दोष हुआ करता है.

(३) दस्तकी कब्जी न होने दे.

(४) ठंडे जलसे स्नान करना चाहिये.

(५) इन्द्री पर रोज ठंडे जल की धार डालनी चाहिये.

(६) पसवाड़े सोना चाहिये, चित्ता सोने से स्वप्न दोष होता है.

(७) प्रभातको जल्दी उठना चाहिये और एक वार उठ कर पिछा सुवह सोना नहीं चाहिये.

(८) सोते समय पेशाव करके सोना चाहिये, और रात्री में जव जव जगे तभी फिर पेशाव करके सोना चाहिये,

(९) सोने के कमरे में हवा वरावर आती जाती रहे

इसका प्रबंध रखना चाहिये. खिडकिया खुली रखनी चाहिये. रातको ठंडी मालुम दे तो अच्छी तरह ओढना चाहिये पर ओढने के बजाय खिडकिया बंद न करनी चाहिये मुंह पर-भारी कपडा ओढकर सोना नहीं चाहिये.

(१०) सोने के पहिले कुछ समय तक टहलना अच्छा है इस मे स्वप्न दोष का भय कम रहजाता है.

(११) रात्रीमें नहीं खाना चाहिये.

(१२) रात्री के समय सोने से पहिले ठंडे पानी से हाथ पैर धोना चाहिये और यदि हो सके तो सिरके पिछले हिस्से को व गरदनको ठंडे पानी से धोलेना चाहिये

(१३) सोने से पहिले गरम गरम दूध पीने से भी स्वप्न दोष व वीर्य श्रावकी बीमारी लग जाती है.

(१४) सन्ध्या के समय यदि शौच (टट्टी) जाने की आदत होतो उसे कभी न चूकना चाहिये जिसे स्वप्न दोष होता हो उसे सोने से पहिले एक बारटट्टी जरूर जाना चाहिये.

ताकतके नुस्खे.

(६२) (१) रसायन चूर्ण,

आमले गोखरू नीमगिलोय

कर शीशी में भर दें. उसमें थोड़ी केशर व जायफल मिलाकर दो तीनमाशे दूधके साथ फंकी लेने से धातुविकार व धातुकी निर्वलता दूर होगा,

(२) पथ्या अवलेह,

हरड़ेकी छाल १० तोला, मीश्री १० तोला.

शहद २० तोला, चांदी के वरक २०

हरड़ेकी छाल व मीश्री को अलग अलग कूटकर कपड़ छानकर के ऊपर लिखे तोल से लेकर एकत्र मिला लें फिर एक वड़े वरतन में शहद के साथ मिलाकर अवलेह वनालें, और चांदी के वरक भी एक एक करके अवलेह में मिला लें मात्रा तीनसे छ माशे तक रोज सुवह शाम लेवे,

(३) ताकतकी दवा,

हरड़ेकी छाल १ तोला. वेहड़ा आंवले गोखरू और छोटी इलायची वंसलोचन *छोटी पींपर क्रौंचवीज विदारीकंद सव चीज आधी आधी तोला, सफ़ेद मूशली दो तोला, मीश्री पांच तोला इन सव चीजोंको कूट पीसकर खरल करें.

वहुत वारीक होनेपर शीशीमें भरदें—तीन माशे सुवह व तीन माशे शामको घी में मिलाकर चाटलें उपर गरम दूधमें मीश्री मिलाकर पी लेंवे,

---

* छोटी पींपरको ८ दिन तक पानीमें भिगो दें फिर सुखा कर खरल करलें, पानी रोज वदलते रहे.

अगर मौका होतो इस कुल चूर्णकी बादाम ४० तोला पिस्ता २० तोला खोपरा २० तोला मावा २० तोला चांदीके वरक ४०, खांड (देशी शक्कर) की चाशनी में मीठाइ बनाकर, २० तोले सुबह रोज लिया करे उपर दूधमें घी मीलाकर पीया करें.

परहेज—तैल गुड़ खटाइ बद रक्खे.

परस्त्री, वेश्या प्रसगका सर्वथा त्याग करें,

सप्तव्यसननिषेध,

द्युतं च मासं च सुरा च वेश्या
पापर्द्धि चौरी परदार सेवा
एतानि सप्त व्यसनानि लोके
घोराति घोरं नरकं नयन्ते ॥१॥

(६३) जूआ, मास, मदिरा, वेश्या, शिकार, चौरी, परस्त्री, यह सात बुरे व्यसन है इनके सेवन करनेसे इस भवमें अनेक दुःख व परभव में असख्य वर्ष तक नरक भोगना पडता है, सप्त व्यसनमें एक के लगनेसे सर्व व्यसन आ लगते है, जूआ मांस, मदिरा शिकार, तो जैन जाति में बंदीही है परंतु उसके समान सट्टे आदि व्यापार व भंग आदि नशे अभक्ष्य

भोजन व अभक्ष्य औषधियां, वेश्या चौरी व परस्त्री सेवन जैनियों में जो कुछ है, वड़ी शरमकी वात है जैसे एक व्यसन लगनेसे दूसरे व्यसनभी आ लगते हैं उसी तरह नशे वाजों को भी यह अनुचित कार्य करने पड़ते हैं और होतेर आलशी अयाशी वनकर उद्योग हीन हो जाते हैं मतलव यह है कि सव तरह नुकसान ही है.

फायदा कुछ नहीं ऐसे कार्य्य छोड़नेसे आपका कल्याण होगा और श्रीमान महानुभावोंसे अर्ज हैं कि अपने जाति स्वधर्मी भाइयों पर उत्कृष्टी दया लाकर उनको शिक्षा विद्या दान देकर नोकरी व धंधे लगाओ, उद्योगशाळा वोर्डिंगशाळा कायम कर धंधे नोकरी, कारीगरी हुनर करने लायक वनाओ फिजूल खर्ची घटाओ जिससे चोरी जूआं वेईमानी, अय्याशी वगेरह कुमार्ग के रास्ते न जावे, (बुभुक्षित: किं न करोति पापम्) (भुखों मरता क्या नहीं करता),

अर्थात् पापी पेटके खातिर उद्योगके नहीं मिलनेसे चौरी सट्टे वगेरह करने में उद्यत होते हैं।

अतः जाति हित चिन्तकों को इस तरफभी ध्यान देना चाहिये।

हानिकारक रिवाज.

(६४) हानिकारक रिवाज वावत मुनिमहाराजोंने फर्माया व फर्माते रहें हैं अखवार वाले लिख लिखकर थके का-

म्फॅंस के उपदेशकोंने कह कहकर अपना मगज खाली किया मगर रूपये में चार आने भी कम नहीं हुवा इस लिये महाशयों हिम्मतकर बुरे रिवाजोंको बंद ही करदो तो जैन जाति पर आपका वड़ा उपकार होगा, कई बातें तो भिन्नभिन्न लेखों द्वारा इस किताब में वतलाई ही है कुछ रिवाज बंद करनेके यहा लिख देता हूं,

मरण पश्चात् रोना कुटना पिटना व कई दिनों तक उसका शोक रखना व रोना वगेरह.

मरण पश्चात् करयावर आदि करना (करयावरके रिवाजको) तो कतई जडमूळसे ही उठा देना अच्छा है.

व्याह शादीमें ज्यादे खर्च व वेश्या नृत्य आतिशवाजी, रात्री भोजन जळ छाननेका पुख्ता इंतजाम न होना, लज्जाहीन गीत गाली आदि गाना नाचना.

विदेशी कपडा वगेरह फैन्सी सामान खरीदना (देशी वस्तु मिल सके और विदेशी वस्तुकी जरूरत को देशी वस्तु पूरी करसके ऐसी हालत में) विदेशी वस्तु कतई नहीं लेना, काम में नहीं लाना चाहिये,

भोजनमें झूठा ऐंठा डालना.

निर्लज्जा मालूम हो एसे बारीक वस्त्र पहरना.

अपने जीतेजी, अपनी स्थावर [illegible] ज[illegible]ाद के बावत अपने मरण [illegible] [illegible]गर तेहरीर

(वसीयतनामा हिब्बानामा वगेराह) सरकारसे तस्दीक रजी-स्ट्री न कराना [यानी जीतेजी तस्दीक करा देना अच्छा है]

बालबच्चोंको जेवर व रेशमी वगेरह फैशनेबल वस्त्र पह-नाना, व शीतला बोदरी (विस्फोटक रोग) से बचाने के वा-स्ते छोटी उमर में न गोदाना (खणाणा).

भोजनादिक में परोसकारीका इंतजाम न करना.

(६५) बडे पुरुषोंका आदर सन्मान इज्जतमें टालाटूळी व इर्षा द्वेष करना, इस जगह कई महाशय सवाल पैदा करेंगे कि जातिमें धर्ममें सब बराबर है,

जवाब–जातिकी अपेक्षा तो बराबरही हैं मगर वह जिस बातमें (बुद्धिमें, बलमें, धनमें, धर्ममें उमरमें दानमें विद्यामें,) बड़े हैं वह बड़ेही समझे जावेंगे जिनके मातापिता परपितादि बड़े हो गये बड़े काम कर गये तो उन्की संतानभी एक अ-पेक्षा से बड़े दर्जे ही में समझी जाती है ऐसे बड़े पुरुषोंका आदर सन्मान जरूर करना चाहिये अप्पन ही अप्पन की इज्जत नहीं करेंगे तो दूसरे कब करेंगे.

सगाइ होने बाद आभूषण, (जेवर कपड़े) ज्यादे मं-गाना भेजना ।

हाथी दांतकी कांचकी विदेशी चूड़ियां पहनी होळी आदि त्याहारों पर रंग पानी धूळ मिट्टीमें स्त्री पुरुषोंका खेल खेलना,

अशुद्धता अपवित्रता से रहना, स्त्रीयोंसे उनके ऋतु *श्रावके ४ दिनोंमें भोजनादि खानपान वनवाना व धान्यादिक के काम कराना गनगोर व्रत वगेरे. मानना पुजना आदि.

हरएक गांवमें देशमें जाति इंतजामका,लेख आदिसे दस्तुर आदि न बांधना, जिससे कई जगह झगडा पड़कर कलह लडाइ आदि होना (तड वंदिया होना)

स्त्रीयोंको ज्यादा पड़दे में रखना इससे देव दर्शन व्याख्यान तिर्थ यात्रामें अंतराय हों और शरारकी तन्दुरस्ती विगड़े और रास्ते चलतेभी कई तरहके नुकसान है, आखोकी शर्म रखना असली पडदा है,

व्याह शादीमें और जाती सबंधी कार्य्यमें अंध परंपरा से मिथ्या लाग मुरजाद हे उसे न उठाना

धार्मिक कार्य्य में व जाति फडमें आमदनीकी लाग नही लगाना, व नही बाधना,

महानुभावों, जहा जैसा मौका हो बुरी लाग घटाकर अच्छी बढ़ाना चाहिये.

सेवा समिती जैन स्वय सेवक मडल सत्प्रचारक मडल स्थापित करके उन्नतिका प्रचार करना चाहिये, प्रचार विना कोइ कार्य्य नहीं हो सकता.

* प्रत्यक्ष प्रमाणसे देख रहेहैं कि जड पदार्थ [पापड़ वगैरह] भी ऐसी ओरतकी छायांसे ... की शुद्धि विगडे उसमें संदेह ...

सवैया.

ब्राह्मण क्षत्रीय शुद्र दिनोंदिन शिक्षणप्राय प्रभाव बढ़ावें;
ढेड़ चमारसी नीचहु जाती सुधारि दशा निज उन्नति पावें: ॥
पासर भील्ल महा पशुसे मदिरा तजिके मिल संघ बनावे;
कोनसे पापसे ईश दयानिधी,जैनीही उन्नति क्यों नहीं पावे: ॥

व्यवहारमें प्रमाणिकता.

(६६) पाठको ? संसार में जो आदर्श पुरुष होते हैं, उनके जीवनको आद्योपान्त पढ़कर विचारनेसे मालूम होगा कि वे अपने जीवनको आदर्श बनाने में मुख्यतया प्रमाणिकतासे ही व्यवहार व्यापार, लेन, देन, पञ्च, पञ्चायती, राज्यद्वार आदिमें हरएक काम करते थे. जैसा उनके चित्तमें होता था, वैसाही वाणीसे व्यक्त बोलते थे, जैसा बोलते थे. वैसाही पालन करते थे अर्थात् उनके मन, वचन, और क्रियायें तीनो ही परस्पर सङ्गत थे, उनके इन तीनोंमें कदापि विरोध विसंवाद नहीं होता था, यानि मनमें कुछ और बोलनेमें कुछ और वर्तावमें कुछ और इस प्रकार नहीं. थे अतः वे सर्व मान्य, धन्यवादके पात्र, आदर्श जीवन संसारमें होते थे।

कहाभी है—

यथाचित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः
धन्यास्ते त्रितये येषां विसंवादो न विद्यते ॥१॥

महाशयों? आधुनिक जमाने में उपर्युक्त प्रमाणिक पुरुषों

में सैंकडे पचास टका पाये जाते हैं और ५० टके तो मायावी अनेक प्रपञ्चोंको कर अपनेको प्रमाणिक कहलाने वाले दिखाई देते हैं कहा तक कहें बड़े२ दयापालक ववायुकायादिकी चिंटीकी रक्षाकर अपने स्वधर्मी भाइयोंको व्यापारमें लेनदेनमें तोल मोल में कोर्ट कचहरी आदिमें जैसे बने वैसे जड़मूल से उखाड़ देनेमें जरा भी नहीं सकुचाते है. कितने ही परमेश्वर के तूल्य कहलाने वाले पञ्चभी स्वार्थ से व पक्षपात से बहुतसी वार वेइमानी करते हैं. चार दिनकी चादनी के मुआफिक थोड़े समय के लिये भले ही वे आनन्द मान लें परन्तु आखिर इसका बुरा नतीजा कडुक फल तीन वर्ष वा तीन मास वा तीन पक्ष वा तीन दिनमें अवश्य अनुभव करते हैं.

कहाभी है.

त्रिभिर्वर्षे त्रिभि र्मासै स्त्रिभिः पक्षै स्त्रिभिर्दिनैः
अत्युग्र पुण्यपापाना मिहैव फल मश्नुते ॥ १ ॥

इस प्रकारके ढोंगी जैनोंने अपने आपको व जैन समाजको बदनाम किया है, आप स्वय जानते होंगे, कि अप्रमाणिकता (वईमानी) का बुरा नतीजा होगा मगर करते वक्त समझते होंगे कि इस खोटे वर्तावको, कार्य्यको कौन जाने, कौन देखे. यह तो हो गया, फायदा हो गया वगेरः बल्कि एक वक्त करनेमे दूसरी वक्त या ...

होती है, जब बेइमानीका फल मिला, नुकसान उठाया पकड़े गये, या दूकानका व्यापार विगड गया—या मुलाजमत छुट गई तो आप अनेक पश्चाताप करते हो न आप दूसरा कार्य्य कर सक्ते हो न आप अपनी उन्नति कर सक्ते हो.

यदि आप अपनेको आदर्श बनाना चाहते हो, यदि सच्चे सुखी होना चाहते हो तो अपना व्यवहार इमानदारी से करें।

प्रिय पाठकों आप छल प्रपंच छोड़के निष्कपटतासे व्यवहार करेंगे तो उसमें पहले पहल यदि कुछ कठिनाइ भी होगा परंतु आगे के लिये इस भवमें व परभवमें सुख जरूर मिलेगा.

बालबच्चोंको पढाने लिखाने व तन्दुरस्त बनाने में कंजुसी न करना.

(६७) बाल्यावस्थाकी खिलाइ पिलाइ वा शिक्षा जो कुछ फायदा करतीहै, वैसी युवाअवस्थाकी नहीं, और युवावस्थाकी जैसी बुढ़ापेकी नहीं, आप और तरफ इतना खर्च करते हो, तो बच्चोंको खिलाने पिलाने व उनकी माताओंके सुवावडों (प्रसूती) में हर्गिज कंजूसी न करो यह खर्च आपको व आपकी संतानों को आयंदा बहुत लाभ पहुंचावेगा. इसी ताकतसे पुरुषार्थी होंगे अच्छी शिक्षा पायेंगे, और इसी तरह शिक्षा दिलाने

पढ़ाने लिखाने अच्छी सगति कराने बुरी आदतों से वचानेके वास्ते लड़कों को ब्रह्मचर्यसे रहनेके गुण दोष व लक्षण सभी सिखाना जरूरी है ।

"मरणं विन्दु पातेन जीवन विन्दु धारणात्" वीर्यपातही मनुष्यकी मृत्यु और वीर्य धारण ही मनुष्यका जीवन है । ब्रह्मचर्य के (बाल्यावस्थामें) दो अग हैं वीर्य धारण, और विद्याभ्यास १८–२० वर्ष तक ब्रह्मचर्यका पालन कराना उनका जीवन सुधारना है बहुधा लड़के दससे वीस वर्ष तक आपसमें व्यभिचार विषयकी बातें करके हस्त मैथुन व पुरुष मैथुन (गुदा भजन) कर विगडते है ऐसे कार्य्य से उस वक्त तो अज्ञान वश वह स्त्री प्रसग जैसा नकली आनद मानते हैं परंतु (नसोंका मारा जाना व कचे वीर्यका टूट जाना आदि) युवावस्था में निकम्मे होकर इसके अनेक उपाय करने पर भी उनका जीवन नष्ट हो जाता है कन्याओंको व लड़को को ऐसी सोवत व वातें, व शृंगार विषयके रस क्रिडा जल्से से बचाना चाहिये, और पढाई व धार्मिक तत्वों का ज्ञान कराना, और उसके साथ सभ्यता इमानदारी अकल मर्दी मेहनत व्यायामादि हरएक तरहके तजुर्बेकी शिक्षा देना मास्टरों व माता पिताओंका मुख्य काम है ।

(६८) बालकोंके लिये शिक्षा तदुरस्तीका जैसा फिकर रखते हो उसी तरह उनको मेहनती अच्छे आचरण व शस्त्र आदि बहादुरीकी विद्या सिखलाना भी जरूरी है, प्राचीन

समय में व कुछ ही वर्षों पहिले जैनियोंनें रणसंग्राम की चातुरी विद्यामें अच्छा नाम पाया व अच्छे अच्छे काम किये थे।

आजकल जैनी महाशयोंमें शारीरिक वल जाता रहा इसका हार्दिक खेद है, आजकल वच्चोंको कई तरहके झूठे डर वतला-कर हदसे ज्यादा लाड प्यारमें आरामी, विलासी वना देते हैं इस आदतसे युवावस्थामें डरपोक वगेराः रहनेसे उनको उद्यो-गिक कार्य्यसे वंचित रहना पड़ता है।

(६९) राजा महाराजा व उनके मंत्री व शिक्षा विभागके उच्च कर्म चारियोंसे हमारा निवेदन है कि अपनी प्रजाके वाल वच्चोंकी शिक्षामें उपरोक्त लेखपर ध्यान देवें, और यह भी निवेदन है, कि जव आपके यहां हरएक तरहके कानून प्रच-लित हैं. और कानून वनने व जारी होनेकी इत्तला आम प्रजा (सर्व साधारण) को न देते हूए कानूनके विपरीत कार्य्य करने वालों को दंड देते हो तो कानूनके ग्रंथभी सरल भाषामें छोटी छोटी पुस्तकों के रूपमें मदर्सों में पढाइ के लिये जारी कर दिये जावें–ताकि उनको अनजान [मिया-दका, स्टाम्पका, रजीस्टरीका, दीवानीफोजदारीका, काश्तकारी, जमींदारीका, म्यूनिसिपलकमेटी कस्टमादि]का दंड नुकसान न उठाना पड़े और हर वक्त सरक्यूलर नये नये जारी करना व रद्दोवदल करना वंद रक्खे, जो वात कुछ दिनों वाद सूझती है वह पहिले ही चारों तरफा वादी, प्रतिवादी संवंधी देख

सोच कर तैकरलें आयंदा होने वाले आने वाले कार्य्य उपद्रव का पहिले इतजाम कर लेना बुद्धिमानोंका कर्तव्य है।

सर्व धर्मके इतिहासादि विषय पढाईके कोर्समें जारी है मगर जैन जनता आपकी प्रजा व राज भक्त होते हुए भी उनके ग्रंथोका नाम निशान नही रक्खा, इस लिये जैन धर्मके तत्वज्ञान [जीव विचार नवतत्व दडक संग्रहणि कर्म ग्रथ, ज्ञानके भेदानुभेद स्याद्वाद दर्शनादि] और इतिहास [ऋपभदेव शातिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरादि भगवान व भरत, सुंभूम आदि चक्रवर्त्ती व श्रीपाळ श्रेणिक चद्रगुप्त कुमारपाळादि महाराजा के चरित्र] व श्राद्ध विधी विवेक विलासादि ग्रथ स्कूलोंमें पढाये जावे तो थोड़े परिश्रममें अच्छे तजुर्वेकी शिक्षा मिले.

और एसी शिक्षा पानेवाले लड़ाइ झगडे मारकाट राजद्रोह आदिसे डरते रहेंगे।

सट्टे आदि हानिकारक धन्धे.

(७०) लोभ वश सट्टे आदि बुरे व्योपार व उचे व्याजका लैन देन व हेसियत के बाहर धंधा (थोड़ी पूजी ज्यादे व्यापार) करनेही से जैनियों की उन्नति न होकर भयकर अवनति हुई है. अधिकांश जैनी व्यापार धधा उंचे नीचे व्याजका लैनदैन करते है ओर जो जो सेठ साहूकार व्योपारी महाशय बिगडे है उन पर दृष्टी डाली जावे तो १०० में अस्सी

उपरोक्त तीन कारणों ही से बिगड़े नजर आते हैं. ज्यादा खर्ची व फैशन तीसरी बात लोभ वश आगा पिछा न विचार ने सेही यह तीनों कारण उपस्थित होते हैं, सट्टे के बाबत तो अधिकांश महानुभावों को अनुभव ही है इस वास्ते न लिख-कर उंचे व्याज के बाबत पाठकों से कुछ निवेदन है,

(७१) उंचे व्याज के लेने दैनेमें देनेवाले अपने फायदे व्याजकी आमदनी के भरोसे अन्धे होकर अपने घर की पूंजी बल्के दूसरों से उधार ले ले करभी दूसरों (हिंसा का धंधा करनेवालों) को बांट देते हैं. प्राचीन समय में तो इस व्यवसाय हीसे अपनी आमदनी कर बड़े बड़े साहूकार हो-गये क्योंकि लेने देनेवाले इतने दाव पेच बेईमानी के जान-कार नहीं थे, और धान्यका भाव सस्ता रहनेसे कुछही वर्षांत कमहोने व जमाना बिगड़ने पर भारी तेजी (पहिले उधारका आसामियोंका धंधा करनेवालोंके पासनाज बहुत पोते रहताथा) में धनवान हो जाते, दुकाळ में उधार दिया हुवा रूपया बाकी जरूर रहजाता मगर धान्य पोते रहने से, उससे कई गुनी कसर निकलकर रुपया जायदाद इकट्ठी हो जाती और फिर अच्छा जमाना होनेपर गई सालों का रूपया भी पट जाता, और यश भी रहजाता,

मगर अब वह जमाना नहीं है, धान्य के भाव पहिले हीसे तेजी रहते हैं तेजी में तेजी ज्यादा से ज्यादा सवाया ड्योढ़ासे ज्यादा फायदा नहीं मिल सकता, वर्तमान कानून से

विशेष व्याज अनुचित माना गया है. इस बातको सब कोइ जानने लग गये हैं. गरज के वक्त सब कोई खुशामद करते हैं मगर रुपया लेनेवाले अपने दिल में समझतेही है कि सौ रुपये की जगह ७५) ८०) अपने पल्ले पड़े यह कसर मौके आने से निकाल लेंगे ज्यादेसे ज्यादा अदालत सिवाय सेठजी पास जोरही क्या हैं कानून में अनेक तरह के ऐसे रस्ते है कि चाहे जैसा दस्तावेज हो लडने झगड़ने की गुजायश मिल ही जायगा. ऐसा विचार कर कुछ दिनतो हा हा करते है नखीर सेठ लोगो (कर्ज देनेवालों) को मुकदमें बाजी लडाई झगडे वैर विरोध करना ही पड़ता है व्याज आना दूर रहा मूलका पटाना मुश्किल हुवा, घरका काम धधा नया व्यापार छुटा और रातदिन इसी पैरोकारी दाव पेच में अपना पैसा व अमूल्य समय बर्बाद किया

इसी तरह उचे व्याज का उधार लेने वालों की हालत समझिये लेनेवाले अपने खर्च जरूरत व किसी व्योपार कारखाने व खेती आदि में मुनाफे के हिसाब पर उचे व्याज की परवाह न कर कर्ज लेलेते हैं, मगर वो इसमें बडी भारी भूल करते हैं खर्च में कमी वेशी करना लगाना अपने इख्तियार की बात है और जिस काम में आप मुनाफेका अंदाजा करते है उसमें कई तरह की जोखम हैं,आपकी आशा फलीभूत होना कर्मानुसार हैं अगर फायदा न हुवा तो व्याजका बोझ उठाना मुश्किल पडेगा.

(७२) उंचे व्याज के लैनदैन करने वालों को मंदे भावों का माल खरीदना उनका संग्रह रखना व गाय भैंस बैलादि रखना जमींदारी जागीरी खरीदना रखना पसंद नहीं आता, अगर जैनी भाई इन तीन सतरों पर ध्यान लगावें तो हिंसा का बचाव हो. अनेक तरह के अनर्थ पैदा न हो. चित्तकी वृत्तियां संतोषी रहे आर्तध्यान ज्यादे न करना पड़े.

प्राचीन समय में एसेही धंधो से जैनी श्रीमंत थे फैशन का खर्चा उनके नहीं था, ज्यादे खर्चा नहीं रखते थे, माल सामान भोजनादि पदार्थ सस्ते होने से अपनी आय व्यय के लेखानुसार खर्च करते थे, सब पदार्थों की किम्मत बढने पर भी आप लकीर के फकीर बनते हो, और ज्यादा खर्चा करते हो इसी कारण से तृष्णा बढती है और अपनी झूठी नामवरी में थोड़ी पूंजी हो ते हूए दूसरों के सहारे भरोसे पर ज्यादे धंधा करते हो, थोड़ी पूंजी में ज्यादे धंधा होसके इसी कारण से सट्टा व वायदेका सोदा करना पड़ता है जिसको ज्ञानी लोगोंने जूआ खेलना कहा है, यह आपको व आपकी संतानो को दुःखदाई होता है व होवेगा.

कन्या विक्रय.

[७३] प्रिय पाठकों! जैसे उंचे व्याजका लेनदेन से व्यापारादि में बट्टा लगता है. वैसेही कन्या विक्रय करनेंसे

कुलमें कलङ्क लगता है, जिस धर्मके अनुयायी अपनेको सर्वोच्च अहिंसक मनाने का दावा करते है, वेही अपनी अङ्गजा (कन्या) को कसाई माँसको वेचते है, वैसे रुपयेका रुपयाभार के तोलसे वल्कि उससेभी ज्यादे मोलमें अर्थात् वीस २ पच्चीस २ हजार रुपयों में वेचते है, मोल लेने वाले भी अन्धे, वहेरे, लूले, वुढ्ढे आदि होते है, अफसोस ? ? सद अफसोस इतने रुपये लेने परभी कन्याके वापके घरसे दरिद्रता देवी दूर नहीं होती है, अर्थात् कन्याको वेचने वाला निर्धन ही रहता है, जिस समय कन्याका पैसा आता है तव तो अच्छा लगता है, परन्तु अन्तमें चार दिनकी चादनीकी नाइ जैसे पैसा आया था वैसेही–दुर्व्यसन, वेश्या, चोरी. लूंट आदिमें लडकेको व्याहती दफे खुद घरकी ओरतके मरजाने पर और अयोग्य फैसनादि से अनेकों खर्च आ पड़ते है, इस तरह नदीके पूरके मुआफिक वह पैसा चला जाता है, कन्याको वेचनेसे नाक कट जाता है, यदि वह कन्या युवावस्थामें पति के मरजाने पर कामदेवसे पीडित हुई अनेकों कुकर्म जातिके डरसे गुप्त रीतिसे करती हैं, ऐसा करनेसे उसको हमल रह जाता है वेचारी इज्जतकी डरके मारे अनेक ओषधिया द्वारा वा पूर्ण समय होने पर वालक के जन्म होते ही हत्या कर देती है, इत्यादि कोटिशः पाप कन्या वेचने वाले माँ वाप के सिर आ लगते हैं, इस भवमे वे इन्नती परभवमें नरकादि दुर्गति के दुःख भोगते हैं। कहा भी हैं

कन्या विक्रय कर्तारः पापात्मानो भवन्तिते
दारिद्र्यपीडिताह्यत्र यान्त्यमुत्र च दुर्गतिम् ।

अर्थात् कन्याको वेचने वाले पापी पुरुष दारिद्र्य से पीड़ित होते हैं, और सन्तानोका उच्छेद होता है, और दुर्गति जाते हैं । इन कन्या विक्रयी पुरुषोंने जैन धर्मको कलङ्क लगाया हैं । जातिके अग्रेसरोंको चाहिये कि वृद्ध विवाह वाल विवाह आदि को जैसे वने वैसे वन्द करानेके कानून जारी कर कन्याओं के आशिर्वादको लेवें कन्याके माँ वापको भी चाहिये कि अपनी लड़कीको योग्य पतिसे पासमें पैसे न हो तो कङ्कुके चांके व श्रीफलके दान पूर्वक विवाहित करनेकी योग्य रीति अङ्गीकार करें अगर इस प्रकार न होगा तो—लज्जाको छोड़कर कन्या अपने आप किसी योग्य पतिको ढूंढ लेगी और विधवा विवाह भी जारी होगा, गर्भपात होंगे, वर्णसंकरता होगी, इत्यादि होंगे अतः पहलेसेही योग्य कार्रवाइ करना ठीक हैः ।

निराश्रित जैनियोंको आश्रय देना

(७४) तिर्थंकर गणधर महाराजों का शास्त्रों में फर्माना है, कि अच्छी बातें दिन व दिन पंचमकाल में कमहोंगी उच्च कुल उच्च धर्म की हालत घटेगा, नीच वढ़ेगा, कई दफे जैन शासन का उदय भी होगा, अखीर पंचमकाल तक श्रावक

श्राविका रहेगा वही हालत नजर आ रही है मजदूर शूद्र काम करनेवाले जो कुछ पैसा कमाते है, पढा लिखा महाजन का लड़का नहीं कमा सकता श्रावक श्राविका आराम में नही हो तब तक संतान वृद्धि और उन्नति की आशा करना फिजूल है इस लिये उद्योगशाला, बोर्डिंगशाला, विधवाशाला, अनाथाश्रम हर एक गाव में अगर गांव में नहीं तो शहरमें जिले में प्रान्त में अवश्य ही स्थापित करना और अपने जातिभाई धर्मी भाई को तनमन धन से मदद करना चाहिये, एसे कार्य के लिये लॉटरिया निकालना भराना व कॉन्फरन्स आफिस से व धनाढय श्रीमतो से मदद लेना व अपनी २ शक्तिनुसार दिल लगा कर रूपये देना चाहिये सर्व जैनी भाइयोंका कर्तव्य है कि रोजाना अपने खर्च के हिसाब से) या -) धर्मी सार्धर्मि की भक्ति के लिये पैसा निकालना देना इसका सबको नियम लेना चाहिये, अगर आप संसारिक व धार्मिक सर्व काम कर के ऐसे कामो में रूपया अर्पण करेंगे तो कुछ ही वर्षों में जैनियोंकी स्थिती पलटकर सितारा चमकता देखेंगे कन्या पाठशाला में धार्मिक पढाई लिखाई व सिलाई व सूती ऊनी कलाबत्तू जरी किनारी का कसीदा व सादा बुनना वगैरः कारीगरी सिखलाना चाहिये श्राविकाश्रम विधवाश्रममें पापड वडी दाल आदि भोजनकी सामग्री बनाना चर्खा कातना सूत कपड़ा बनाना सिलाना वगैरः करना व देश परदेश में बिकाने भेजना जिससे उनका निर्वाह अच्छी तरह

चल सके उद्योगशाला, वोर्डिंगशाला अनाथाश्रममें तरह तरह की शिल्प कारीगरी चांदी सोने जवाहिरात वगैरःके जेवर जड़ाई, वड़ाई का काम सुनारी दर्जीगीरी इंजीनीरी वही खातेका लिखना देखना कृषि विद्या आदि जो (जहां जिस देश में शहरमें) अच्छा आमदनी का धंधा हो सिखलाया जावे.

जैनियोंकी संख्या कैसे वढे

(७५) उपरकी कलम नं. १० से २७ तक संख्या घटने के कारण लिख आया हूं उनमें रोकनेयोग्य कारणों को रोकने चाहिये, और प्रचारकरने योग्य कारणों का प्रचार करना चाहिये, कितनेक देशों में कई लोग अपने परंपरासे चले आते कुल धर्म में पार्श्वनाथ, केशरियानाथ, गौतम स्वामी आदि को मानते हैं मगर उनको सच्चे धर्म्मके तत्वोंका उपदेश देने वाले साधु साध्वी महाराजों के दर्शन सत्सङ्ग व्याख्यान आदिका लाभ नहीं मिलने से अपने तारणहार मूल धर्म को भूलकर अन्य धर्म व पंथो में मिल गये हैं।

मर्दुम शुमारी में करीव डेढ लाख जैनी दूसरे धर्मों में मिले हैं. जैसे हजारी वाग वङ्गाल के आसपास में रहने वाली " सराक " जाती, मेवाड, वागड़, बुदेलखंड, दक्षिण खानदेश आदिमें औ काठियावाड़ में उना दीप वन्दर आदि वहोत से स्थानों में मोढ महाजन, अगरवाल, श्रीमाल, पोरवाल, ओशवाल आदि हैं.

उनको उपदेश, मदद, आदिद्वारा जैसे वने वैसे सर्व व्यापकस्याद्वाद दर्शन के वोधो वासित करने चाहिये, शुद्धदेव, गुरु धर्म के मर्म वताना चाहिये। जैनियों को खासकर मुर्दुम सुमारी में अपने को जैनी तरीके से लिखाना चाहिये ताकि जैनों की सख्या का यथातथ्य स्वरुप जगत में जाहिर होवे।

जैन यति महात्माओंसे प्रार्थना.

(७६) प्रिय पाठकों ? उपरमें मै लिख आया हू कि जैन सख्या कैसे वढ़े उसमें पहले पहल मर्दुम शुमारीमें जैनी मात्र अपना नाम जैनी तरीके से लिखावें, दूसरा उनको कि जहां पादचारी साधु महाराजका उपदेश दुर्लभ हो वहां जैन यति महाराज पधारकर उपदेश देवें और जैन धर्मका सच्चा रहस्य समजावें जैन सम्प्रदाय को पूर्व कालमें यदि विश्व व्यापक वनाया हो तो एक सच्चे सयमी यतिवर्योंने ही परन्तु अफसोस ? ? ? जिन यतिवरों के पैरों में राजा महाराजा शेठ साहुकार आ गिरते थे उनकी अमृत तुल्य वाणीसे हजारो क्यों अनेकशः भव्य जीव अज्ञानको छोड़ व्यसनोंसे दूर हो सदाचारी श्रावक वनते थे आज उन्हीं जैन यति नाम धारी व्यक्तिओंको देखते हो उनके प्रति सद्भाव के वदले घृणा उत्पन्न होती है, कारण ? कारण यही कि जो कर्तव्य उनका था उसमें वे भ्रष्ट हुए कहातक कि एक गृहस्थ भी जो व्यसन

नहीं सेवता हैं वो आधुनिक यति समाजके कितने व्यक्ति सेवन कर रहे हैं.

" दुनियां झुकने वाली है, झुकाने वाला चाहिये " अतः यदि यति महाराजों को समाजसे सत्कार की आवश्यक्ता है, आदर्श अन्वर्थक नामचीन होना हैं, यदि आत्मा को दुर्गति से वचाना हैं, तो अपने आचार विचारों को दुरस्त करें विकानेर, जयपुर आदि जहां आपके अड्डे हैं उनको धर्म का स्थान वनावें अपने शिष्यों देश कालानुसार यथोचित विद्याभ्यास करा कर पंडित वनावें यदि पूर्वजों के जैसे परीषह सहन करने जितनी ताकात न होतो खैर कुछ नहीं आप दुर्व्यसन वीड़ी गांजा तमाखु आदि और यतः खुल्ले लिखने के वजाय आप ही समझ लें इन सवको छोड़ कर ब्रह्मचारी वनकर उपदेश देवें कहने की जरूरत नहीं लोग स्वयं आपकी पूछ इज्जत करेगा यदि आप वर्तमान आचारों से जरा भी पीछे नहीं हठेंगे तो आपकी जो मारवाडी समाज में इज्जत आदि हैं वह क्रमशः नाश हो जायगी, आप ही की कृपासे इन धर्म निन्दकों की संख्या जैन समाज में वढ़ रही हैं आपके वुजुर्गों के वनाये श्रावक ही सच्चे धर्म को अपूज्य दृष्टि से देख रहे हैं. क्या अभीतक आप नहीं समझेंगे, आप के पूर्वजों ने जो जैन शासन की सेवा की उस से आप तिर नहीं सकते आप करेंगे तो आप तिर सकेंगे अन्यथा नहीं, जैन समाज में कई एसे काम हैं जो कमीशन तनख्वाह आदिसे

दूसरों से कर वाते है उनको यदि आप ही करें तो क्याही अच्छा हो कई यति वर जैसे श्रीमान श्री जिनरत्नसूरिजी श्री जिनचारित्रसूरिजी काशी निवासी यति हिराचन्द्रजी, सूर्य मलजी, जतनलालजी आदि जैन धर्म की सेवा कर रहे है जिसे देख कर इस लेखक को वडा ही आनन्द होता है. जो यति महाराज अच्छे आचार वाले है उन्हे धन्यवाद ओर नमस्कार है और यही प्रार्थना है कि आप जैन समाज को सदुपदेश देकर जागृत करें. इसी लेखसे गुरजी महात्मा अपना आचरण सुधारना समझ लें

सेवक भोजक लोगों से निवेदन,

(७७) जैनियोंके साथ प्राचीन कालसे सेवक भोजकोंका सम्वध वताया जाता है, और हरएक कार्य में इन के हक हकूक वधे हुए है मगर आजकल कई जगह कई लोगों की तरफ विचार दृष्टी से देखा जावे तो उल्टा जमाना पाया जाता है कई सेवक लोग अपनी लाग मुरजाद को जमावंदी समझ कर जोरदार हकूमत दार वन गये अन्य धर्मी वन गये सेवा पूजा श्री सघ की भक्ति तनमन से जैन शासन के पक्षकार होना छोडकर वुरे आचरण व्यसन सेवना व भग गाजा तमाखू आदि में लिप्त रहकर सिर्फ अपनी लाग मुरजाद कोही जागीर समझ कर उसी के निर्वाह पर और कार्य उद्योग पढाई लिखाई छोड वैठे है. मुझे अफसोस है कि

जैन धर्मी जैनियों के साथी हो कर आपने भी अपना जीवन विगाड़ा और जैनियों पर विना काय की धोंस लगा उनका नुक्सान किया यहदोनों के लिये नुक्सान कारक है. मेरे इसलेखका मतलव यह नहीं है कि सेवक भोजकों को छोड़ दो उन से संवंध तोड़ दो उनकी लाग मेट दो मगर मेरा असली मतलव यह है. कि आपका श्री संघपर जोर हक जरूर आप खुद पढ़े सभ्यता सीखें सेवा करनेकी तमीज सीखें जैन धर्म के शास्त्रों को तनमन से पढे पढावें माने और उसके मुताविक चलें और अपना तनमन जैनशासन के अर्पण कर दें इन वातों पर आपव आपकी स्त्रीयां रहे व इसी लायक अपने वच्चों को तालीम दें इनकामों की तरफ ध्यान देने से आप व आप की संतान भविष्य में फायदा उठाएगी मैं तो आपकी हर तरह उन्नती चाह रहा हूं और श्री संघ से भी अर्ज है कि आपका उन से सम्बन्ध है. वह आप के साथी हैं आप हजारों रूपया साल हर तरह से दूसरोंको देते हो तो औरोंके निस्वत इनलोगों का (जो जिस लायक हो) पहिले हक है, दोनो से मेरा निवेदन है कि एक हाथ से ताली नहीं बजती दोनों हाथ शामिल अच्छे धुपते हैं वगेरः वातों को विचार कर इनका इंतजाम करना जरूरी है.

जिर्ण–मंदिर–पुस्तकोद्धार.

(७८) महानुभावों ? जो भारतके धन कुवेर कहलाते थे, शाम–दाम–भेद–दण्ड, चार प्रकारकी राजनीतिमें निपुण थे, जिनकी वीर गर्जनासे वड़े २ राजा महाराजा भी थर २ कॉपते थे, जो मातृ भूमिके अद्वितीय पुत्र थे, जिन्होने जगत के सव धर्मों के सिरताज जैन धर्मके प्रचारमें तन–मन–धन न्योछावर कर दिये थे, उन्ही पुण्यशाली पूर्वजोंके प्रतापसे जैन धर्मका गौरव आज दिखाई दे रहा है। वहिरात्म भाव मग्न मूढोंको परमात्म स्वरुपका भान करानेके लिये जिनके दर्शन से अपार ससार सागरको तिर जाते है ऐसे तीर्थ स्थानोंमें जिन्होने अपने अनर्गल धनसे वनाये हुए दिव्य गगन चुम्वी देवालय आज भी (शत्रुञ्जय, गिरनार, आवु, राणकपुर, तारङ्गा समेत शिखरादि तीर्थ व मारवाड मेवाड़ गुजरात आदि देशों में) मनोहर दिखाई दे रह हैं।

अफसोस आज जैनोंके पासमें करोडों की सख्यामें देव-द्रव्यके रुपये पडे है तोभी पूर्वोक्त प्राचीन जैन मन्दिरों की पूज्य मूर्तियें अपूज्य अवस्था में यत्र तत्र मारवाड़ मेवाड़ आदि देशोंमें दिखाई देती है, कहीं २ तो मंदिरोंके द्वार कांटोंकी वाडों से रुध गये है तो कहीं चिमगादड़ो ने ही अपना अड्डा जमाया है तो कहीं वर्षा से नींवे खुदी जाकर भूमिशायी होते हैं, कहीं विधर्मी लोग अनेक आशातना करते हैं, इत्यादि अनेक तरह की अव्यवस्था जैन मन्दिरों की हो रही हैं.

वैसे ही उन पूर्वजों के वनाये हूए ज्ञान भंडारों में रहे हुए अपूर्व ज्ञानमय ग्रन्थ रत्नों को उधई, कीट आदि भक्षण कर रहे हैं, तो कहीं तालेहीमें बन्द पडे हैं, तो कहीं मूर्खोंके हाथ जा पड़नेसे वे ग्रन्थरत्न धूलकी किम्मतसे विदेशमें जा रहे हैं, कहीं वे परवाइसें जल जाते हैं तो कहीं सड़ जाते हैं, हाय ? ? ? इतना होने पर भी जैसी चाहिये वैसी व्यवस्था अज्ञानताके घोर अन्धेरमें घुरांटे लेते सोते हुए जैन समाजके अग्र गण्य नेता नहीं करते हैं.

प्यारे पाठकों ? यदि इसी तरह एक सैका व्यतीत होवें तो विधर्मियोंके पुस्तकों से या इतिहासके साधनों से ही पता लगेगा कि कोई समय जैन धर्मथा यदि आप संसारके इतिहासों में सुवर्णाक्षरोंसे नामाङ्कित होना चाहते हो यदि आपको परमात्माकी और प्रेम हैं. यदि आपको ज्ञानामृतकी पिपासा है. यदि आप स्व–परका उद्धार करना चाहते हैं तो इस अकर्मण्यताको दूर कर कर्मवीर वनकर जीर्ण मन्दिरोद्धार व पुस्तकोद्धार करने को यथा शक्ति कटिबद्ध होवें महाशयजी अद्यावधि आपके सरस्वती भंडारों में ऐसे ऐसे ग्रन्थ रत्न पड़े हैं जिनके द्वारा तीन काल में होनेवाले तीनों लोकके भाव आप हाथ में रही हुई चीज़के समान जान सकते हैं।

तत्वज्ञानके,न्यायके,व्याकरणके कोशके,ज्योतिषके, अलङ्कार, छन्दः, काव्य वैद्यक आदिके अभूत पूर्व ग्रन्थ जैन महर्षियोंने